।। श्री सुरभ्यै नमः।।

मासिक

कामधेनु कल्याण पत्रिका

दिसम्बर 2025

श्री मीरा माधव भगवान

वर्ष: 02 Website:-www.godhampathmeda.org Email :- K.k.p.pathmeda@gmail.com अंक: 09

सुरभि उवाच

हे मेरे प्यारे पुत्रों !

आप सभी को मेरा बहुत–बहुत मंगलमय शुभ आशीर्वाद!

आप सभी का सदा ही मंगल हो! प्यारे संतों! एक बात पुनः–पुनः कहूँगी कि मुझे अभी तक ईश्वर को समर्पित हुए लोगों के बारे में कुछ अधिक पता नहीं लगा कि भगवान तो बोलकर कहते नहीं और उनको जरूरत भी नहीं है, पर लाखों की संख्या में ऐसे साधु–संत, साधक आदि हमारे देश में हैं जो अपने को भगवान और धर्म को समर्पित कहते हैं। ऐसी संख्या लाखों में है। उनकी क्या पहचान है? कैसे पहचाने कि कौन समर्पित है और कौन नहीं?

हे मेरे प्रिय महात्माओं! सनातन धर्म में आप संत बड़े माने गये हैं और सभी आपका सम्मान करते हैं, आपको ऊँचे आसन पर विराजमान करते हैं। समाज और सरकार आपकी बातों पर विशेषता से ध्यान भी देते हैं। इसलिये आपका विशेष दायित्व बनता है कि आप समाज और शासन दोनों को वेदलक्षणा गो की महिमा और वर्तमान काल में उसकी पीड़ा समझाओ। यह बात भी है कि समाज और शासन ये दोनों केवल बातों से नहीं समझेंगे। स्वयं सन्त गो के प्रति समर्पित हो जाएं तो अपने आप समाज भी समझ लेगा और शासन भी समझ लेगा।

हे मेरे प्रिय सन्तों! आप लाखों–लाखों की संख्या में जब भगवान के प्रति समर्पित हैं, माने भगवत् आराधना का अपने ऊपर चोला पहने हुए हैं, अपने को भगवान के प्रति समर्पित बताते हैं, पर भगवान को तो आपसे कुछ चाहिये नहीं। क्या चाहिये भगवान को आपसे? तो आप समर्पित होकर भगवान से ले ही रहे हो, भगवान को दे क्या रहे हो?

हे मेरे प्यारे संतों–महंतों ! आज आपको मैं बड़े रहस्य की बात बताती हूँ। आप जो यह कह रहे हैं कि आप भगवान को समर्पित हैं, भगवान ने देखा कि मैं परीक्षा ले लूँ मेरे को समर्पण करने वाले इन संतों की। आपकी परीक्षा लेने के लिये ही भगवान स्वयं इस गोवंश के रूप में इस समय दुःखी होकर आपके सामने आये हैं। भगवान देखना चाहते हैं कि आप वास्तव में समर्पित हो या झूठा ढ़ोंग कर रहे हो। आप बुद्धिमान हो, इसलिये मेरी बात को आप तुरन्त समझ गये होंगे।

मुझे आप पर पूर्ण विश्वास है कि आप सभी अपने–अपने क्षेत्रों में गो की समर्पित भाव से सेवा कर परीक्षा में अवश्य सफल होंगे। एक बार पुनः आप सभी को मेरा बहुत–बहुत शुभ आशीर्वाद।

तुम्हारी ,,, प्यारी माँ सुरभि

।। वन्दे धेनुमातरम् ।।

यया सर्वमिदं व्याप्तं जगत् स्थावरजंगमम्। तां धेनुं शिरसा वन्दे भूतभव्यस्य मातरम्।।

वर्ष:2

कामधेनु-कल्याण

अंक:9

मार्गशीर्ष मास शुक्लपक्ष वि.सं. 2082 रा.शाः 1947 दिसम्बर–2025

1. **प्रार्थना क्या है** – परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानन्दजी महाराज 04
2. **श्री कामधेनु कृपा प्रसाद** – परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानन्दजी महाराज 07
3. **ठाकुरजी कब आओगे** – भगवत प्रेरणा से 10
4. **श्रीमदभागवत कथा** – पू. द्वाराचार्य महंत स्वामी श्री राजेन्द्रदासजी महाराज 14
5. **बिना गोमाता के ठाकुर सेवा नहीं**– पू. द्वाराचार्य महंत स्वामी श्री राजेन्द्रदासजी महाराज 17
6. **वेदवाणी में गोमहिमा** – पू. द्वाराचार्य महंत स्वामी श्री राजेन्द्रदासजी महाराज 18
7. **श्री राम कथा** – पू. आचार्य श्री दयानंद शास्त्री जी महाराज 19
8. **श्री शिव महापुराण कथा** – पू. गोवत्स श्री राधाकृष्ण जी महाराज 22
9. **परमपद (जीव का अपना असली घर)** – साभार साधक संजीवनी 25
10. **जाऊँ तो जाऊँ कहाँ** – सम्पादक, अम्बा लाल सुथार 27
11. **भगवान के रहने के स्थान** – साभार श्री रामचरितमानस 29
12. **संस्था समाचार** – नवम्बर माह में हुए विभिन्न घटनाक्रमों का संक्षिप्त विवरण 32

गाय बिना गति नहीं

वेद बिना मति नहीं

संस्थापक एवं प्रधान संरक्षक : परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानन्द जी महाराज

Web: www.godhampathmeda.org

Email : k.k.p.pathmeda@gmail.com

सम्पादकीय पता

श्री गोधाम महातीर्थ आनन्दवन-पथमेड़ा,

त.-सांचोर, जि.-जालोर (राज.) 343041

Mob. No. 9828052638

k.k.p.pathmeda@gmail.com

सम्पादक

अम्बा लाल सुथार

10 वर्षीय सदस्यता शुल्क–2100 रुपये मात्र

मूल्य:20 रुपये

श्री कामधेनु कृपा प्रसाद

(परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज)

प्रार्थना क्या है?

परम आत्मीय पूज्य संतगण एवं उपस्थित धर्मात्मा गोभक्त सज्जन भाइयों और बहनों! अभी-अभी हमने और आपने जो प्रार्थना की है उसमें एक रहस्य है। उसका वास्तविक तत्व है अब उस पर हमारे विचार करेंगे। प्रतिदिन यह प्रार्थना हम करते हैं। इस प्रार्थना के भावों पर आज विचार करना है। ऐसा कोई व्यक्ति है ही नहीं जिसके जीवन में किसी न किसी प्रकार की मांग ना हो। किसी आवश्यकता का होना ही वास्तव में प्रार्थना है। हमारे जीवन में किसी आवश्यकता का जो अनुभव है कि मुझे जल चाहिए हैं, जल में जो है गंगाजल चाहिये। तो गंगाजल की आवश्यकता का अंदर अनुभव होना यही प्रार्थना है। भक्त के हृदय में भगवान की आवश्यकता का अनुभव होना भगवान की प्रार्थना है। लोभी के हृदय में पैसों की आवश्यकता का अनुभव करना पैसों की प्रार्थना है। पद लोलुप के हृदय में पद पाने की चाह रखना पद की प्रार्थना है।

हमें जिनकी आवश्यकता अनुभव होती है और उसके आगे तो फिर आगे की बातें हैं, पर आवश्यकता का अनुभव होना कि कैसे प्राप्त हो, इस तरह के भाव का जगना ही प्रार्थना है। भक्त को भगवान की सत्ता स्वीकार करने के बाद उनकी महिमा, महत्ता और फिर आवश्यकता को स्वीकार करना आस्था है। उनकी महत्ता को स्वीकार करना उपासना है और उनकी आवश्यकता का अनुभव करना प्रार्थना है। भगवान की सत्ता को स्वीकार करना भागवत आस्था है भगवान की महिमा को स्वीकार करना भगवान की स्तुति उपासना है और भगवान की जीवन में आवश्यकता का अनुभव करना भगवान की प्रार्थना है।

कुछ लोग सोचते हैं कि प्रार्थना तो केवल भगवत भक्तों की, भगवत विश्वासियों की, ईश्वर वादियों की वस्तु है, पर वास्तव में ऐसा नहीं है। प्रार्थना तो प्राणी मात्र की वस्तु है। क्यों? क्योंकि कोई ऐसा व्यक्ति है ही नहीं जिसके जीवन में कोई न कोई आवश्यकता ना हो। अपनी आवश्यकता को जानना ही वास्तव में प्रार्थना है। भूख लगे तो भोजन की और प्यास लगे तो पानी की आवश्यकता का अनुभव करना ही प्रार्थना है। आवश्यकता का अनुभव करना, आवश्यकता का जानना ही प्रार्थना है।

इस दृष्टि से सभी प्राणी प्रार्थी है। सभी प्रार्थना करते हैं। कुछ लोग कामनाओं को ही आवश्यकता मान लेते हैं, परंतु जो लोग विचारशील है वे इस बात को जानते हैं कि कामना और आवश्यकता में बड़ा भारी भेद है। कामना की निवृत्ति होती है अथवा उसमें प्रवृत्ति होती है। या तो कामना को पूरा करने के लिए प्रवृत होते हैं या फिर उसको छोड़ देते, उससे निवृत्ति होते हैं, पर आवश्यकता की तो पूर्ति होती है, उसकी निवृत्ति नहीं होती है।

अब आप विचार करें कि जो प्रार्थना है अभी हमने और आपने जो प्रार्थना की उसमें सबसे पहला वाक्य क्या है? हे मेरे नाथ! यह पहला वाक्य है। इस वाक्य का उच्चारण करते ही हृदय में ऐसा भास होता है कि हम अनाथ नहीं है, कोई हमारा अपना है और जो हमारा अपना है वह कैसा है? वह सर्व समर्थ है, रक्षक है। अब आप सोचिए कि समर्थ और रक्षक के होते हुए हमारे और आपके जीवन में चिंता और भय का कोई स्थान रहता है क्या? जब हमारे अपने प्रभु सर्व समर्थ और हमारे रक्षक हैं तो

फिर हमें किस बात की चिंता, किसका भय? यह सभी जानते हैं कि निश्चिन्तता और निर्भयता जब जीवन में आ जाती है तो उनके आने पर हम जिस किसी भी परिस्थिति में, कैसी भी परिस्थिति हों तो हम उस स्थिति का सदुपयोग करने लग जाते हैं। हमारे अंदर उसके सदुपयोग करने का सामर्थ्य आ जाता है। लेकिन भयभीत तो चिंतित होने पर हम अपनी स्थिति का सदुपयोग नहीं कर सकते। भय और चिंता का अंत होते ही प्रत्येक मनुष्य जिस परिस्थिति में है उसी परिस्थिति का सुंदर ढंग से सदुपयोग कर सकता है और परिस्थिति का सदुपयोग किए बिना न तो श्रेष्ठ परिस्थिति की प्राप्ति होती है और न परिस्थिति के बंधनों से मुक्ति होती है।

इस दृष्टि से जो व्यक्ति जिस परिस्थिति में है उसका सदुपयोग करना ही होगा और उसका सदुपयोग करने के लिए निश्चिन्तता और निर्भयता जीवन में अनिवार्य है। निश्चिन्त और निर्भय होने के लिए यह आवश्यक है कि जो अपना है उससे हम अपना नित्य संबंध स्थापित करें। किससे? जिससे हमारी उत्पत्ति हुई है उससे हम अपना नित्य संबंध स्थापित करें। किस लिए? निश्चिन्त और निर्भय होने के लिए। जिससे हमारी उत्पत्ति हुई है और जिसमें हम स्थित हैं उससे हमें अभिन्न होना है। हम जिससे उत्पन्न हुए हैं उससे हमको अभिन्न होना है। यह तभी संभव है जब हम उनको अपना मानें। अपनत्व से अभिन्नता आती है।

तो हे मेरे नाथ! ऐसा कहते ही प्रभु के साथ अपनत्व हो जाता है। नाथ समर्थ को कहते हैं, रक्षक को कहते हैं। तो वे नाथ समर्थ और रक्षक मेरे हैं यह अपनत्व है। उनके साथ यह अपनायत का संबंध स्थापित करते ही उनसे अभिन्नता हो जाती है।

ऐसी कोई उत्पत्ति हो ही नहीं सकती जिसके मूल में कोई अनुत्पन्न तत्व ना हो। धरती, जल, अग्नि वायु, आकाश, सूर्य, चंद्र, मानव, वृक्ष, लताएं, पशु, पक्षी, प्राणी, देव, किन्नर, राक्षस आदि कोई ऐसी उत्पत्ति नहीं हो सकती जिनके मूल में कोई अनुत्पन्न तत्व ना हो। उदाहरण की दृष्टि से धरती पर जितने भी प्राणी, वृक्ष आदि उत्पन्न होते हैं उनके मूल में धरती अनुत्पन्न तत्व है। धरती स्थिर है इसलिए उनमें से मनुष्य वृक्ष लता पशु पक्षी आदि उत्पन्न होते हैं फिर धरती में विलीन हो जाते हैं। ठीक इसी तरह ध ारती सहित सारी सृष्टि किसी एक अनुत्पन्न तत्व में से प्रकट होते हैं, उसी में ठहरते हैं, उसी में विलीन हो जाते हैं। वो जिनमें से सब उत्पन्न होते हैं, सबकी स्थिति का आधार है, सबका प्रकाशक है उसी को भक्त लोग भगवान कहते हैं।

इस दृष्टि से हमको यह मानना ही पड़ेगा कि जिससे हमारी उत्पत्ति हुई है वह हमारी उत्पत्ति से पहले था चाहे उसको जाने अथवा न जाने माने अथवा न माने परन्तु वह अवश्य है जिससे हमारी उत्पत्ति हुई है। जिससे हमारी उत्पत्ति हुई है वह हमसे पहले था। एक यह भी नियम है कि जिससे हमारी उत्पत्ति हुई है उसको हम प्राप्त कर सकते हैं। उसमें हम श्रद्धा रख सकते हैं। उससे हम संबंध जोड़ सकते हैं, परंतु उसे हम मन बुद्धि का विषय नहीं बना सकते।

ध्यान देना मार्मिक बात है। ऐरे गेरे नथ्थू खैरों के यह बात समझ में नहीं आती जल्दी। जिनकी इस तरफ कुछ लगन हो, जो बुद्धि से अतीत भी जीवन है, परिस्थितियों से, वस्तुओं से, व्यक्तियों से, अवस्थाओं से अतीत भी जीवन है उस जीवन में आस्था करने वाले भाई बहनें है उनको यह थोड़ी समझ में आ सकती है। वह बात यह है कि जो जिससे उत्पन्न हुआ है उसको वह प्राप्त कर सकता है। उसमें वह श्रद्धा रख सकता है। उससे संबंध जोड़ सकता है परंतु वह जिससे हम उत्पन्न हुए हैं, वह हमारे मन बुद्धि इंद्रियों का विषय नहीं है। वह हमारी इंद्रियों का, मन का, बुद्धि का विषय नहीं हो सकता। हम उनमें श्रद्धा कर सकते हैं हम उनसे संबंध जोड़ सकते हैं हम उनको पा सकते हैं पर हम इंद्रियों का विषय नहीं

कर सकते मन का विषय नहीं कर सकते, उसकी बुद्धि का विषय नहीं कर सकते। क्यों? क्योंकि बुद्धि, मन, इंद्रियों तो उन्हीं से उत्पन्न हुए हैं। कारण और कार्य दोनों एक होते हुए भी कार्य कारण को जान नहीं सकता। कारण से कार्य की उत्पत्ति होती है तो यह करण है, करण की उत्पत्ति का आधार जो कारण है या कर्ता है उसको कारण जान नहीं सकता। इंद्रियों, मन, बुद्धि आदि करण हैं, इन करणों के द्वारा कार्य का संपादन तो हो सकता है, पर ये करण कर्ता को और अपने कारण को जान नहीं सकते, पकड़ नहीं सकते, देख नहीं सकते।

तो भाई यह बात थोड़ी ज्ञानियों की, शिक्षित लोगों की बात हो गई। इस दृष्टि से आप विचार करें कि कार्य कारण में विलीन तो हो सकता है, पर कार्य कारण को विषय नहीं कर सकता। यह बात सभी विचारशीलों को माननी पड़ेगी। इस दृष्टि से उसे हम जाने या ना जाने परन्तु उसका होना स्वत: सिद्ध है। हमारी उत्पत्ति के आधार को हम जाने या ना जाने पर वह है यह स्वत: सिद्ध प्रमाण है।

अब आप विचार करें कि जो है वह हमारा अपना है। यह नियम है कि जिससे अपनत्व होता है, आत्मीयता होती है उसमें प्रियता अपने आप आ जाती है। जो हमें अपना लगता है वह अपने आप मीठा लगने लग जाता है, प्यारा लगने लग जाता है। यह जो प्रियता है, यह प्रियता, यह प्यार है, अपनापन जो है यह स्वभाव से ही रस रूप है यह बात सभी के अनुभव में है। आप सोचें जिसको आप अपना मानते हैं क्या वह आपको प्यारा नहीं लगता? लगता है। जो प्यारा लगता है क्या उसमें आपको रस नहीं आता है? आता है। आत्मीयता प्रेम की जननी है और प्रेम रस का भंडार है। आत्मीयता से प्रेम का जन्म होता है और प्रेम स्वयं रस स्वरूप है।

इसलिए कहा कि योग सत्संग रूपी भूमि में, मूक सत्संग की भूमि में योग रूपी वृक्ष लगता है, योग रूपी वृक्ष पर ज्ञान रूपी फल लगता है और ज्ञान रूपी फल में प्रेम रूपी रस होता है। प्रेम रस का भंडार है। तो इस प्रेम की प्राप्ति अपनायत से, अपनेपन से, अपनों से आत्मीयता से होती है। जब हम सुने हुए प्रभु को अपना मानते हैं तो जिसे हम अपना मानते हैं, वह हमें अच्छा लगने लग जाता है। यही प्रेम का प्रादुर्भाव है।

इस दृष्टि से जब हम हमने उसको अपना मान लिया, जिससे समस्त सृष्टि उत्पन्न हुई है उसको अपना मान लिया, जिससे समस्त सृष्टि प्रकाशित हुई है उसको हमने अपना मान लिया जिससे समस्त सृष्टि सत्ता पाती हैं उसको हमने अपना माना तो आप सोचो हमारे और आपके जीवन में चिंता और भय का कोई स्थान रहेगा क्या? जब हम सारी सृष्टि की उत्पत्ति के आधार, सारी सृष्टि के प्रकाशक को, सारी सृष्टि को सत देने वाले को जब हम अपना मानेंगे तो फिर भय और चिंता कोई रहेगी क्या? नहीं रहेगी।

जो सबका सब कुछ है वह हमारा अपना ही है तो जो हमारा अपना है उससे हमारी कोई भी बात छिपी नहीं है। हम कैसे हैं, हम क्या चाहते हैं उनसे कुछ भी छुपा हुआ नहीं। क्यों? क्योंकि वे हमारे अपने हैं यूं। फिर अब आप कहोगे कि फिर प्रार्थना की आवश्यकता ही क्या है? जब वह सब जानते हैं, हमारी कोई बात उनसे छिपी नहीं है तो फिर प्रार्थना क्यों करनी? तो भाई प्रार्थना की आवश्यकता तो इसलिए है क्योंकि हम स्वयं अपनी आवश्यकता से अपरिचित हो जाते हैं, हम अपनी मांग को भूल जाते हैं। हमारी वास्तविक आवश्यकता क्या है इससे जब हम अपरिचित हो जाते हैं तब प्रार्थना की आवश्यकता पड़ती है। बहुत कम भाई बहन ऐसे हैं जो सचमुच यह जानते हैं कि हमारी वास्तविक आवश्यकता क्या है? वास्तविक आवश्यकता जानने वाले बहुत कम भाई बहन है। ...शेष अगले अंक में

श्री कामधेनु कृपा प्रसाद

(परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज)

समाज और राष्ट्र की भलाई का सर्वोत्तम साधन गोसेवा है

सर्वेश्वर सच्चिदानंद परमात्मा अंतर्यामी रूप से सभी के हृदय में विराजमान है। उनका पावन स्मरण करते हैं। उन्हीं की आराध्य, उपास्या, सेव्या पूज्या वेदलक्षणा गोमाता तथा उसके अखिल गोवश की वंदना करते हैं। यहाँ मध्यान्ह सत्संग के अवसर पर उपस्थित पूज्य संतगण, हमारे संतों के लाडले और सब तरह से रक्षण्य और सेवन्य जंगम स्वरूप तथा उपस्थित धर्मात्मा गोभक्त सज्जनों बंधुओं माताओं! सभी को सादर सप्रेम हरि स्मरण, जय गोमाता, जय गोपाल।

सज्जनों! भारत की संस्कृति में और भारत की सभ्यता में वेदलक्षणा गोमाता का स्थान सर्वोपरी रहा है। वेदिक काल से लेकर पराधीन भारत में भी गोमाता की प्रतिष्ठा, उनके सम्मान, उनके संरक्षण और सेवा के लिए हमारे पूर्वज सर्वस्व लुटाने के लिए तत्पर रहे हैं। एक-एक गो की रक्षा के लिए हमारे ऋषियों ने, हमारे राजाओं ने और सामान्य से सामान्य हमारे पूर्वजों ने अपने प्राण तक दिए हैं। यह धरती तो गोसेवी और संतसेवी है। यहाँ की बहुत ही सुंदर नस्ल साहीवाल भारत की आठ नस्लों में एक प्रधान नस्ल है। सद्गुरु रामसिंह जी ने अपने काल में गोरक्षा के लिए अपने साथियों के साथ बहुत बड़ा अभियान चलाया था और पंजाब की धरती से गोघातियों को हटाने का व्यापक प्रयास किया था। उनके पहले जब मुगलों का, तुर्को का, पठानों का शासन भारत में था उस समय भी हमारे गुरुओं ने, हमारे संतों ने, हमारे शासकों ने, सभी ने अपने-अपने स्तर पर गोमाता का सम्मान और उनकी सुरक्षा के लिए आवश्यक प्रयास किया था। गत 7 दशकों से सर्वाधिक भारत में वेदलक्षणा गोमाता के सम्मान को बहुत बड़ी चोट पहुंची है। उनके अधिकारों का व्यापक रूप से हनन हुआ है।

आप सभी जानते हैं, हमारा देश लाखों वर्षो से कृषि कार्य करता हुआ आया है। भारत की खेती, कृषि परंपरा वैदिक काल से चल रही है। ऋषि परंपरा और कृषि परंपरा ये दोनों एक सिक्के के दो पहलू हैं। हम लोग किसान को अन्नदाता कहते हैं और ऋषि को ज्ञान दाता कहते हैं। ज्ञान आत्मा का भोजन है और अन्न शरीर का भोजन। हमने इन दोनों को दाता के रूप में स्वीकार किया है। परंतु पिछले कुछ दशकों में स्वाधीन भारत में किसान का यह जो सम्मान था अन्नदाता का, प्राण दाता का (अन्न ही प्राण है) वह गिर गया है। किसान अन्न में विष मिश्रित अन्न दे रहा है। वह धरती का पुत्र है पर अपनी धरती माता को विष खिला रहा है।

अत्यधिक उत्पादन के लोभ में हमारी धरती विषैली बन रही है और उसके उत्पादों से पूरा राष्ट्र असाध्य रोगों की चपेट में आ रहा है। यह सब बात प्रत्यक्ष है प्रत्यक्षण किम प्रमाण: । घर-घर में गांव-गांव में नगर-नगर में असाध्य रोगों से ग्रस्त एक बहुत बड़ा समूह तैयार हो गया। पंजाब से एक रेल बीकानेर जाती है उसमें बड़ी संख्या में कर्क रोग (कैंसर रोग) से ग्रसित भाई बहन होते हैं। इसलिए उसे रेल का नाम ही कैंसर ट्रेन हो गया। यह ऐसा असाध्य रोग दो कारणों से होता है- एक तो विषैले खाद्य पदार्थ और दूसरा मानसिक तनाव। मानसिक तनाव में तो कोई-कोई, किसी-किसी को मनोरोग होते हैं, पर विषैले आहार जैसे अन्न है, दूध है, हवा है इसमें जहर हो तो

अनेकों लोग असाध्य रोगों से ग्रसित हो सकते हैं।

स्वाधीन भारत में हरित क्रांति के नाम से भारतीय कृषि को यांत्रिक पद्धति प्रदान की और केमिकल वाले फर्टिलाइजर डाले गए उस धरती मां के साथ बहुत बड़ा अन्याय हुआ। किसान के हाथ से अपनी मां को विष दिलाया लोभ ने और उसी के आसपास में श्वेत क्रांति नाम दिया दूध बढ़ाने के लिए। अन्न बढ़ाने के लिए हरित क्रांति में धरती को विषैला बनाया और दूध बढ़ाने के लिए श्वेत क्रांति के नाम से भारतीय गो की नस्ल का संहार किया और उस जगह संकर पशु बिना गल कंबल और कुकुद वाला जो भी प्राणी है इसे कृत्रिम ढंग से तैयार किया गया है पश्चात जगत में।

दूध की अधिक मात्रा प्राप्त करने के लोभ से जंगल में घूमने वाले युवरास्ट प्रजाति के सूअर तथा जंगली गाय के संसर्ग से पहला क्लोन तैयार किया अमेरिका के न्यू जर्सी शहर में। इसलिए उसे जर्सी नस्ल नाम दिया और उसके पीछे गाय लगा दिया। जैसे यशोदा मैया के पास में पूतना नाम की राक्षसी बड़ा सुंदर ग्वालिनी का वेश बना कर गई और उनको कहा कि अरि यशोदा! मैं तुम्हारी दूर की बहन लगती हूँ तुम्हारा लल्ला हुआ है, खिलाने आई हूँ। गोभक्त होते हैं, भगवत भक्त होते हैं वे हृदय के साफ होते हैं, वे किसी पर कोई संदेह नहीं करते हैं और सबको अपना ईश्वर के नाते मानते हैं कोई और नहीं है, कोई गैर नहीं इस भाव से वे जीते हैं। उन्होंने कहा जैसा हमारा लाला है ऐसा ही यह तुम्हारा भी लाला है खिलाओ। तो वह विष लगाकर स्तनों के गई थी। आप सबको पूरी कथा का पता ही है।

ठीक इसी तरह से यह जो संकर पशु है यह गाय के रूप में हमारी ही गोमाता के गर्भ से पैदा करने की जो यह तकनीक है यह बहुत बड़े मायावी असुरों की माया है। इस पशु के दूध से अनेकों प्रकार के मनोकायिक रोग होते हैं। सूअर और जंगली मादा के मिश्रण से तैयार हुआ तीसरा प्राणी है।

कई वर्षो पहले जब हमारा कोलकाता में प्रवास था तो हमको यह बताया गया कि बांग्लादेश में जर्सी पशुओं को नहीं ले जाते हैं, वध करने के लिये छोटी-छोटी देसी गायों को ले जाते हैं। हमने पूछा क्यों तो बोले कि मांस भख्सी लोग हैं उनको पता है कि यह सूअर की प्रजाति है तो वे सूअर का मांस नहीं खाते हैं। इसलिए उसको न नहीं ले जाकर देसी गायों को ले जाते हैं। अब बताओ जो गोमांस भख्सी है वह भी सूअर प्रजाति के प्राणी का मांस नहीं खाते हैं परंतु जो वह पूजक हैं उनको पता ही नहीं की गाय कौन है? अनजान में उन्होंने एक ऐसे पशु को अपना लिया और उसका दूध पीने लग गए। उनके लिए डेयरियों बन गई जिसके मल, मूत्र और दूध में सब जगह विष है।

वर्ण संकर जो होता है वह रोगों का और शोकों का कारण होता है। गीता जी में अर्जुन ने जब भगवान के सामने अपनी स्थिति रखी तब यह बात भी कही कि इस तरह के जवान योद्धा सब इस रणक्षेत्र में मारे जाएंगे तो उनकी पत्नियों विधवा हो जाएगी और उनसे वर्ण संकर संतानें उत्पन्न होगी वे संतानें आने वाली पीढ़ी और गई हुई पीढ़ियों को नर्क में ले जाएगी। अर्थात् उनका पतन हो जायेगा, वे अधोगति में जायेंगे। ठीक इसी तरह से चाहे यह संकर पशु हो, संकर बीज ये सब पतन की ओर ले जाने वाले हैं। अन्न, फल, सब्जियों के संकर बीज तैयार हो गए और गाय के गर्भ से संकर पशु तैयार हो गया। यह बहुत हानिकारक है।

पाश्चात्य जगत में वे लोग संकर पशु के दूध का दुष्परिणाम समझ गए और वहाँ के कई राष्ट्रों के डयेरी उद्योग गुप्त तरीके से भारतीय नस्लों की गायें ले जा रहे हैं, वेदलक्षणा गायें-नंदी ले जा रहे हैं और हमने सुना है कि अमेरिका जैसा विकसित राष्ट्र उस देश में इस समय 35 से 40 लाख भारतीय गाएं हो

गई। हमारे एक संत है परमहंस स्वामी श्री प्रज्ञानानंद जी महाराज, उन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका में 100 एकड़ जमीन में गोसेवा केंद्र स्थापित किया। मुझे उसका वीडियो लाकर दिखाया। वह बताया तो उसमें हमारी थारपारकर गाय थी। हमने उनसे पूछा कि यह गाएं आप कहाँ से ले गए । बोले यहाँ 35 से 40 लाख गाएं अफ्रीका के क्षेत्र में आ गई। ब्राजील, आस्ट्रेलिया आदि राष्ट्रों में भी बड़े पैमाने पर भारतीय गाय पहुंची। अकेला ब्राजील 40 लाख भारतीय गायें प्रतिवर्ष तैयार करके यूरोप के देशों को दे रहा है।

8000 वर्ष पहले यूरोप के लोग जलयान में हमारी गायें साहीवाल, थारपारकर, राठी, सिंधी, गिर, कांकरेज जैसी अच्छी नस्लों को ले गए थे। यह घटना आपकी जानकारी के लिए बताते हैं कि हमारे गीताप्रेस से प्रकाशित गो अंक 1945 में भाई श्री हनुमान जी पोद्दार ने इसका उल्लेख किया है। वे गीताप्रेस के प्रथम सम्पादक थे।

तो सज्जनों यूरोप के देशों में गाय थी ही नहीं। संसार में वेदलक्षणा गायों का क्षेत्र वह है जिसमें सूर्य भगवान अधिक प्रकाशित होते हैं। उसी के यह कुकुद और गल कम्बल होती है और यही वेदलक्षणा गाय है। इसी का गोमय और गोमूत्र पवित्र है तथा दूध, दही, घी भी पवित्र तो है ही साथ ही ये आरोग्य देते हैं, बल देते हैं, ओज देते हैं, तेज देते हैं, मेघा देते हैं, धरती (धारण करने की शक्ति) देते हैं और स्मरण करने की शक्ति देते हैं।

हमारी धरती का भोजन गाय का गोमय और गोमूत्र है। इससे धरती पुष्ट होती है और सात्विक उर्वरा शक्ति से सम्पन्न होकर हमारे लिये आरोग्यवर्धक अन्न, फल, सब्जियाँ प्रदान करती हैं, पर कई दशकों से हमारी धरती को गाय का गोमय मिलना कम हो गया है। कहीं-कहीं तो बिलकुल बंद ही हो गया है। उसकी जगह केमिकल वाला फर्टिलाइजर और दूसरे पशुओं का मल मिल रहा है।

तो भाइयों कहने का भाव यह है कि जिस देश में लाखों वर्षो से गोमाता का स्थान सर्वोपरि था, एक-एक गाय के लिए दिलीप जैसा सम्राट और च्यवन ऋषि जैसा महान ज्ञानी अपने आपको अर्पित करने के लिये तत्तपर रहता था, उसी देश में आज प्रतिदिन हजारों की संख्या में वेदलक्षणा गायों का संहार हो रहा है, वह भूखी प्यासी भटक रही है, प्लास्टिक खा रही है, दुर्घटनाओं का शिकार हो रही है।

भारत गणराज्य में गोमाता की जो गोपालन लोक संस्कृति थी वह आज लुप्तप्राय हो गई है, उसे सुरक्षित और पुनर्जीवित करने का कोई व्यापक प्रयास नहीं हो रहा है। कुछ राज्यों में गो के पक्ष में कुछ कानून बने हैं, बाकी राज्य गो के प्रति निष्ठुर बने हुए हैं अब भी। हमारे देश में जैसे पहले गोरक्षा के लिए लोग तत्पर रहते थे ऐसे आज भी है, ऐसा नहीं कि आज सबकी चेतना सुस्त हो गई है। कई लोक गोपालन, गोसेवा और कसाइयों से गोवंश को बचाने का अपने-अपने स्तर पर प्रयास करते हैं।

अनेक प्रदेशों में गोरक्षक अपने प्राणों की परवाह किये बिना पूरी रात्रि को जगते हैं कि यहाँ से कसाई निकलेंगे। वे कसाइयों को पकड़ते भी है मगर प्रशासन का रवैया ऐसे गोरक्षकों के प्रति सहयोग का नहीं रहता है, उल्टा गोरक्षकों को ही फंसा देते हैं। कसाइयों के हाथ में मारक और घातक शस्त्र होते हैं। गोरक्षकों पर आये दिन प्राणघातक हमले करते हैं। देश में कई गोरक्षकों के प्राण ले लिये। फिर भी प्राणों की परवाह किए बिना गोवंश को रोकने का प्रयास करते हैं। इससे केवल भावनाओं को जीवित रखा जा सकता है।

पूरे गोवंश की रक्षा करना ऐसे संभव नहीं है जब तक भारत गणराज्य गो के पक्ष में कानून नहीं बनता और गो के अधिकारों की रक्षा नहीं करता। पहाड़, वन, अरण्य, आगोर, गोचर ये सब गो भूमियाँ हैं और गोमाता के लिए ही ....शेष अगले अंक में

ठाकुरजी कब आओगे

(भगवत प्रेरणा से)

पिछले अंक से आगे.........

एक दिन शुक्ल पक्ष की रात्रि को मन्दिर प्रांगण में महंत श्री भोलादास जी व पंडित गंगाधर जी के पास बैठे-बैठे जप करते समय अचानक खुले नेत्रों से देखते हुए शीश पर साक्षात् पिता महा भगवान ब्रह्माजी का कर कमल फिर आदि पुरुष भगवान नारायण का कर कमल और अंत में आदि गुरु भगवान शिव शंकर के कर कमलों का अलौकिक स्पर्श प्राप्त हुआ। इससे पूरे शरीर में विद्युत का संचार होने लगा, नेत्र बंद हो गए, हृदय परमानंद से सरोबार हो गया। वाणी सहित शरीर के पूरे अंग निचेष्ठ बन गए। एक मुहूर्त पर्यन्त यह स्थिति बनी रही, उसके बाद नेत्र खोलकर चारों तरफ देखा, परन्तु अन्य कोई वहाँ नहीं था।

महाराजश्री ने अपूर्व आश्चर्य के साथ महंत श्री भोलादासजी को आवाज लगाई- आप कहाँ हैं? आप कहाँ है? सुनकर महंतजी नींद से उठकर आए और बोले कि महाराज आपको नींद आ गई थी, इसलिए हम लोग भी रात्रि विश्राम के लिये दो तीन घंटा पहले यहाँ से चले गए थे। क्यों क्या बात हुई, आप बहुत असहज लग रहे है? महाराज जी बोले- हमको अभी-अभी कोई स्वप्न आया है उससे ऐसी अवस्था बन गई है। तब महंतजी ने कहा अब आप अपने कक्ष में पधार कर विश्राम कीजिए सब ठीक हो जायेगा। महाराज ने कहा अच्छा जी हम जाते हैं, ऐसा कहकर गुफा में पहुँच गए परन्तु कुछ देर पूर्व घटित घटना का प्रभाव यथावत बना रहा। इस स्थिति में आकाश वाणी हुई कि आपको त्रिदेव स्वरूप सद्गुरु के दर्शन और दिव्य दीक्षा प्राप्त हो गई है, परन्तु अभी कुछ लौकिक प्रारब्ध शेष है धैर्य रखिए, यह सुनकर महाराज जी शांत होकर आसन पर लेट गये। प्रात:काल उठने पर रात्रि वाली घटना का अनुभव बना रहा इसके कुछ समय बाद महर्षि भृगूजी महाराज और तपोनिष्ठ श्री मार्कण्डेय जी महाराज के दर्शन मिले। उन्होने कुल गोत्र और गुरु गोत्र का बोद्ध दिया।

यहाँ डेढ वर्ष तक गायत्री जप व गोसेवा करते-करते महाराज जी ने गौरी कुण्ड में निवास किया। एक स्वप्न में आदेश हुआ कि कल एक व्यक्ति मन्दिर दर्शन करने आयेगा उनके साथ मुम्बई चले जाना। उधर प्रारब्ध भोग पश्चात जन्मभूमि कुछ समय रहना है। आगे का मार्गदर्शन जन्मभूमि से मिलेगा। प्रात:काल एक ब्यावर निवासी सज्जन गौरी माँ का दर्शन करने आए। पूछने पर ज्ञात हुआ कि वे मुम्बई में सोना-चांदी का व्यापार करते हैं। उनके साथ महाराज जी मुम्बई आये कुछ दिन उक्त महाशय के घर में ठहरे।

एक दिन महाराज जी श्री मम्मादेवी माताजी मन्दिर में दर्शन करने गए वहाँ पूर्वाश्रम के मामाजी मिल गए। वे अपने प्रतिष्ठान में ले आए और परिवार को सूचना भेजी कि महाराज यहाँ आ गए हैं। उनको हमारे पास रखेंगे और आगे की शिक्षा तथा व्यवसाय का अभ्यास हम करायेंगे। महाराज जी को दो-तीन महिना मुम्बई में मामाजी के निकट रहते हुए व्यतीत हो गए। एक रात में महाराज जी मामाजी की दुकान में अन्य कर्मचारियों के साथ सो रहे थे तभी चुपके से चोर घुस गये और 14 हजार रुपये निकाल कर चले गए। प्रात:काल ज्ञात होने पर पुलिस को बुलाया। पुलिस वाले दुकान में रहने वाले कर्मचारियों के साथ महाराज जी को भी ले गए। एक सप्ताह उपरांत मामाजी ने वहाँ से महाराज जी को जन्मभूमि भेज दिया। तीन वर्ष बाद जननी व जन्मभूमि के दर्शन हुए।

महाराज जी छ: महिना नित्य नियमपूर्वक गोसेवा आदि कार्यो में सहयोगी बनकर पूज्या माताजी

के साथ रहते हुए व्यतीत हो गए। एक दिन पूज्य नानाजी पधारे। तीन वर्ष की यात्रा के अनुभव पूछे। महाराज जी ने नानाजी को विस्तार से सब घटनाएं बताई। महाराज जी के मुख से सब अनुभव सुनकर बङे नानाजी बहुत प्रसन्न हुए। पूज्य पिताजी के आग्रह पर नानाजी तीन दिन वहीं ठहरे और उसके बाद महाराज जी को साथ लेकर अपने गाँव आम्बलगढ के लिए प्रस्थान कर लिया। वहाँ पर महिनों तक श्री नानाजी महाराज जी से श्री गीता-रामायण, संत समागम व अन्य सदग्रन्थ पढ़ाते और श्रवण करते थे। शास्त्र पढ़ते समय महाराज जी के मन में काशी जाकर वेदाध्ययन का भाव प्रकट हो गया।

एक रात वयोवृद्ध रूप लेकर श्री हनुमान जी महाराज जी के स्वप्न में पधारे और बोले कि जिसके लिये साधना बीच में छोड़कर आये हो अब यहाँ का वो प्रारब्ध पूरा हो गया है। अब चलो हमारे साथ तुम्हारी साधना अभी शेष है। नींद टूट गई। प्रातःकाल चोथे पहर उठकर पूज्य नानाजी की आज्ञा लिए बिना चुपचाप मन में वेदाध्ययन का भाव रखकर वहाँ से निकल गए। जीव जब ईश्वरीय मार्ग पर अग्रसर होता है तो भगवत कृपा से सभी संत महात्मा, सद्ग्रंथ, हनुमानजी, शिवजी आदि सभी देवता माँ की तरह नन्हे शिशु रूपी भक्त का विशेष ध्यान रखते हैं और उसके पीछे-पीछे रहते हैं। विभिन्न वाहनों व रेल गाड़ियों से यात्रा करते हुए महाराज जी कुछ दिन पश्चात बनारस काशी पहुँच गए।

महाराज जी ने गो घाट में गंगा स्नान करके विशवनाथ भगवान के दर्शन किए। उसके बाद गुरुकुल आश्रम की खोज आरंभ हुई। प्रथम दिन का अनुभव पीड़ादायक रहा। रात होते-होते मारवाड़ी सेवा संस्कृत महाविद्यालय अस्सी घाट के आसपास आदर और स्नेह सहित आश्रय मिला परन्तु पहले दिन का अनुभव सदमा दे गया। अध्ययन की रुचि समाप्त होने लगी और उपरामता बढ़ने लगी। महाविद्यालय के स्नेहशील आचार्य महाभाग ने शान्तवना और प्रोत्साहन देने का प्रयास किया परन्तु मानव समूह से महाराज जी का मन ऊबता गया, नींद टूट गयी, भूख मिट गयी।

श्री काशी विशवनाथ मंदिर

इसी स्थिति में एक दिन महाराज जी ने प्रातःकाल गंगा स्नान करके भगवान विशवनाथ जी के दर्शन किए और निर्माल्य का पान करके अन्न छोड़ दिया।

काशी का इतिहास :- 'काशी' एक ऐसा नाम है जो जिव्हा पर आता है तो लगता है आत्मा पवित्र हो गई। विश्व के सर्वाधिक प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद में काशी का उल्लेख मिलता है- 'काशिरित्ते आप इवकाशिनासंगृभीताः'। इसका अर्थ है काशी प्रकाश देने वाली नगरी है। पुराणों के अनुसार यह आद्य वैष्णव स्थान है। पहले यह भगवान विष्णु (माधव) की पुरी थी। जहां श्रीहरिके आनंदाश्रु गिरे थे, वहाँ बिंदुसरोवर बन गया और प्रभु यहाँ बिंधु माधव के नाम से प्रतिष्ठित हुए। ऐसी एक कथा है कि जब भगवान शंकर ने क्रुद्ध होकर ब्रह्माजी का पांचवां सिर काट दिया, तो वह उनके करतल से चिपक गया। बारह वर्षो तक अनेक तीर्थो में भ्रमण करने पर भी वह सिर उन से अलग नहीं हुआ। किंतु जैसे ही उन्होंने काशी की सीमा में प्रवेश किया, ब्रह्महत्या ने उनका पीछा छोड़ दिया और वह कपाल

भी अलग हो गया। जहाँ यह घटना घटी, वह स्थान कपालमोचन-तीर्थ कहलाया। महादेव को काशी इतनी अच्छी लगी कि उन्होंने इस पावन पुरी को विष्णुजी से अपने नित्य आवास के लिए मांग लिया। तब से काशी उनका निवास-स्थान बन गया।

''काश्यां हि काशते काशी काशी सर्वप्रकाशिका। सा काशी विदिता येन तेन प्राप्ताहि काशिका।।''काशी आत्मज्ञान के प्रकाश से जगमगाती है, काशी सब वस्तुओं को आलोकित करती है। जो इस सत्य को जान गया वह काशी के साथ एकरूप हो जाता है।

काशी धरती पर जो वर्तमान में आबाद शहर है उनमें सबसे पुराना शहर है। इसके अन्य नाम वाराणसी तथा बनारस है। काशी में 'काशी विश्वनाथ' भगवान का बहुत प्राचीन एवं प्रसिद्ध मंदिर है जो गंगा नदी के किनारे स्थित है और यह 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है। यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है, जिन्हें 'विश्वनाथ' या 'विश्वेश्वर' (ब्रह्मांड का भगवान) भी कहा जाता है। यह भारत के सबसे महत्वपूर्ण मंदिरों में से एक है, जिसे हजारों वर्षो के इतिहास के साथ-साथ अनेक बार तोड़ा और पुनर्निर्मित किया गया है। इस मंदिर का उल्लेख महाभारत और उपनिषदों में भी मिलता है। माना जाता है कि वर्तमान में यहाँ जो मंदिर है इसका निर्माण 11वीं शताब्दी में राजा हरिश्चंद्र ने करवाया था, जिसे बाद में मुगलों ने कई बार नष्ट किया। अंतिम बार औरंगजेब द्वारा तोड़े जाने के बाद, 1780 में इंदौर की महारानी अहिल्याबाई होलकर ने इसका पुनर्निर्माण करवाया था। सन् 1835 में महाराजा रंजीत सिंह जी ने मंदिर के शिखर को स्वर्ण मंडित करवाया था।

यह माना जाता है कि काशी को 'मोक्ष क्षेत्र' और मुक्ति का द्वार कहा जाता है, यहाँ शरीर छोड़ने वाले जीव को मुक्ति मिलती है। काशी से कभी गंगाजल नहीं ले जाया जाता है क्योंकि यहाँ के घाटों पर लगातार दाह संस्कार होते रहते हैं उनकी राख गंगाजी में प्रवाहित होती रहती है। गंगाजल लेने से मृतात्माओं के शरीर के अंग साथ में आ सकते हैं, जिससे उनकी मुक्ति में बाधा आ सकती है। इसलिये यहाँ से कोई गंगाजल नहीं ले जाते हैं।

महाराजश्री ने यहाँ अधिक समय तक निवास नहीं किया। किसी अज्ञात शक्ति की प्रेरणा से महाराज जी बनारस छोड़कर तीर्थराज प्रयाग होते हुए रेल आदि वाहनों द्वारा श्री अयोध्याजी पहुँच गए। सरयूजी में स्नान करके कुछ दिन सरयू घाट पर निवास किया, तत्पश्चात आप चित्रकूट के लिये विजय हुए। चित्रकूट रामघाट पहुँचने पर पंजाबी भगवान के नाम से प्रसिद्ध एक संतजी का सानिध्य मिला। कुछ दिन उनके सानिध्य में निवास करते हुए उनसे चित्रकूट में एकांतवास पूर्वक चातुर्मास अनुष्ठान करने की अभिलाषा प्रकट करने पर उन दयालु महात्माजी ने श्री हनुमान धारा के ऊपर श्री सीतामाता रसोई नामक स्थान में व्यवस्था कराई।

चित्रकूट धाम

चित्रकूट उत्तर प्रदेश राज्य में स्थित है और मध्य प्रदेश राज्य के सतना जिले की सीमा से लगा हुआ है। यह मंदाकिनी नदी के किनारे बसा हुआ है। कहा जाता है कि जब अत्रि ऋषि कठोर तपस्या में थे तब उन्हें बहुत प्यास लगी, उनकी प्यास को बुझाने

के लिये उनकी पत्नी सती अनसूया जी ने देवताओं से प्रार्थना की तब गंगा की एक धारा के रूप में मंदाकिनी प्रकट हुई। यह पवित्र स्थान ऋषि अत्रि, माता अनसूया, महर्षि वाल्मीकि, महर्षि मार्कडेय, सरभंग ऋषि, माडंव ऋषि, भगवान दत्तात्रेय आदि की तपोभूमि रहा है। प्रभु श्री राम के साक्षात चरण यहाँ की भूमि पर पड़े। 14 वर्ष के वनवास में वे यहाँ लगभग 11 वर्ष 6 माह रहे व अपनी कृपा से वन वासियों को, जन-जन को, ऋषि-मुनियों को कृतार्थ किया। तुलसी ने रामकथा को लिपिबद्ध करने का कार्य अयोध्या से प्रारंभ कर समापन काशी में किया लेकिन उनके चित्त में, मानस में चित्रकूट ही बसा रहा। इसलिए वे पूरी रामकथा के सार स्वरूप लिखते हैं-

रामकथा मंदाकिनी चित्रकूट चित चारु।
तुलसी सुभग सनेह वन सिय रघुवीर बिहारु।।

श्री रामजी की कथा मंदाकिनी नदी है, सुंदर (भक्ति से पूर्ण निर्दोष) चित्त चित्रकूट है और स्नेह ही सुंदर वन है जिसमें श्री सीताराम जी विहार करते हैं।

चित्रकूट के लिये यह दोहा प्रसिद्ध है-

चित्रकूट के घाट पर भई संतन की भीर।
तुलसिदास चंदन घिसे तिलक देत रघुवीर।।

चित्रकूट के घाट पर संतों की भीड़ लगी हुई है। तुलसीदास जी चंदन घिसकर श्री राम के तिलक लगा रहे हैं। अयोध्या और काशी में रामजी ने तुलसीदास जी को दर्शन दिये मगर वे अच्छी तरह से पहचान नहीं पाये। रामजी के प्रत्यक्ष दर्शन हेतु हनुमानजी की सलाह पर तुलसीदास जी चित्रकूट आये। तुलसीदास जी चंदन घिसकर दो बालकों के तिलक कर रहे थे तब हनुमान जी को लगा कि तुलसी बाबा फिर कहीं प्रभु श्री राम को पहचानने की गलती न करे, इसलिये हनुमानजी ने तोता बनकर यह दोहा तुलसीदास जी को संकेत करने के लिये सुनाया। इसका मतलब यह था कि आप जिन दो बालकों के तिलक कर रहे हो वे ही राम और लक्ष्मण हैं। यह सुनते ही तुलसी बाबा भाव विभोर होकर श्री रामजी के चरणों में गिर पड़े। तब श्री राम और लक्ष्मण सहित हनुमानजी ने तुलसीदास जी को साक्षात दर्शन दिये।

चित्रकूट राम कहानी का ही पर्याय है। इसके भूगोल, संस्कृति और अस्तित्व में राम कथा ही रची बसी है। किन्तु चित्रकूट की गौरवगाथा राम के जन्म से पहले भी देश-देशांतरों में व्याप्त हो चुकी थी। यहाँ अत्रि के आश्रम का उल्लेख पुराणों में है। उनसे भगवान कपिल की बहन और कर्दम ऋषि की पुत्री अनुसुइया का विवाह हुआ था। गंगा की धारा को चित्रकूट की धरती पर खींचकर लाने वाली अनुसुइया ही हैं, जिसे लोक मंदाकिनी के नाम से जानता है। यहीं पर त्रिदेव महासती के सामने पुत्र बनने के लिए मजबूर हुए और बाद में उन्होंने अपने अंशों का प्रतिदान किया। भगवान दत्तात्रेय का जन्म इन्हीं अंशों का साक्षी है।

भगवान शिव के क्रोध रूप दुर्वासा का जन्म भी यहीं हुआ। भगवान राम के आगमन से पहले ही सरभंग, सुतीक्ष्ण और अगस्त्य जैसे अनेक ऋषि चित्रकूट की चौरासी कोस की परिक्रमा के इर्द-गिर्द आश्रय लेकर बैठ गए थे। कहा जाता है कि ब्रह्मा ने देवताओं से कहा था कि वे भगवान राम का सत्कार करने के लिए विभिन्न रूपों में बिखर जाएं। चूंकि चित्रकूट उनकी आश्रय स्थली बनने वाला था, इसलिए देवता तमाम ऋषियों के वेष में चित्रकूट क्षेत्र में ही विराजमान हो गए थे।

मत्यगजेन्द्रनाथ महादेव आज भी चित्रकूट के उसी तरह राजा माने जाते हैं जैसे उज्जैन में महाकालेश्वर। सत्य यह है कि भगवान शिव ने यहाँ अपनी लिंग स्थापना भगवान राम के लिए ही की थी। इसलिए यह कहने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए कि चित्रकूट की कहानी ही राम की कहानी है। रामायण के अनुसार भगवान ......शेष अगले अंक में

श्रीमद् भागवत कथा

(पू. मलूकपीठाधीश्वर महंत श्री राजेन्द्रदासजी महाराज)

पिछले अंक से आगे.....

भगवान श्री कृष्ण ने छठे वर्ष की आयु में प्रवेश किया। 5 साल के पूरे हो गए। छठे वर्ष की आयु में प्रवेश किया पर हमारा 6 वर्ष को लाला ऐसो दिखे मानो 16 वर्ष को किशोर भया। मैया-बाबा को लाडलो, फिर गोपीन को लाडलो, कौन ऐसो है ब्रज में- प्राणहु ते प्रिय लागत सब कहूँ राम कृपाल रामचरितमानस में और यहाँ सब कहूँ कृष्ण कृपाल। इसलिये छठे वर्ष की आयु में भी ठाकुर जी धींगरा हे गए बृज भाषा में। धींगरा माने पुष्ट हो गये।

अबकी बार साठे वर्ष का जन्मोत्सव मनाया गया। भाद्र कृष्ण नवमी को जन्मोत्सव मनाया गया श्री कृष्ण का। बहुत ध्यान से सुनें- मथुरा में भले ही कृष्ण अष्टमी को जन्माष्टमी हो रही है, कृष्ण का जन्म उत्सव मनाया जा रहा है लेकिन ब्रज में भाद्र कृष्णा नवमी को मनाया जाता है जिसको नंद उत्सव कहते हैं। अभी भी ब्रज में नवमी को ही उत्सव होता है। नवमी को मैया बाबा ने वर्षगांठ बनाई है श्री कृष्ण की।

तो भादो में तो वर्षगांठ मनी। कुंआर और कार्तिक, अभी एक डेढ़ महीना ही बीता था। कार्तिक का ही महिना बीता था। कार्तिक सुदी अष्टमी थी। कार्तिक शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि, श्री ठाकुर जी बछड़ा चराने जाते थे। सभी सखा भी तैयार है। बछड़ा भी वन जाने के लिए तैयार है और मैया ने बालकृष्ण को स्नान ध्यान कराया, श्रृंगार किया वहाँ तक तो ठाकुर जी कुछ नहीं बोले। जैसे ही कहा कि लाला अब कछु खा ले, कलेवा कर ले और तू बछड़ा चरावे को जा। इतना सुनते ही बालकृष्ण प्रभु भूमि में लौटने लगे। सब श्रृंगार बिगाड़ दिया। इतना रोए, इतना रोए कि बालक जब रोते हैं ना तो ज्यादा कष्ट होता है, माथा भी पटक लेते हैं, हाथ पैर पटक लेते हैं। मैया घबरा गई। कछु हवा-ववा को चक्कर तो न पड़ गयो। काहू की नजर-वजर तो नहीं लग गई। लाला को का भयो? सवेरे-सवेरे कछु अनबनो सो तो थो। ऐसा क्या हुआ कि बस सीधा रोने लगा। अरे लाला कुछ बता तो सही तू क्यों रो रहा है? मैया बार-बार गोद में उठाती है और ठाकुरजी एकदम गोद से छिटक करके गिर जाते हैं और भूमि में लोट जाते हैं। सब श्रृंगार बिगाड़ लिया।

हाहाकार मच गया। बालकृष्ण बहुत रुदन कर रहे हैं। बाबा के कान में शब्द पड़े रुदन के तो बाबा दौड़े चले आए। बाबा ने पकड़ने की कोशिश करी बालकृष्ण हाथ में नहीं आ रहे हैं। बार-बार रुदन कर रहे हैं। भूमि पर लोट रहे हैं। बाबा ने बड़े यत्नपूर्वक बालकृष्ण को गोद में लिया। अरे लाला लाला रोने को हेतु तो बता। कारण तो बात तब हम प्रयत्न करेंगे और तेरे समाधान हम करेंगे। ठाकुर जी और जोर से रोवे लग गए। हिचकी बढ़ गई। बाबा बोल- क्यों रे मेहेर तूने लाला को कुछ कह तो नहीं दिया। कोई ताड़ना तो नहीं कर दी? मैया बोली- आप तो सारा दोष हमारे ही माथे पर दोगे। मैंने तो कुछ नहीं बोला। हाँ सवेरे से कुछ अनमना तो था। तो बाबा-मैया ने पूछा- लाला दाऊ ने कुछ बोला क्या? ठाकुर जी ने ना में सिर हिलाया। तो क्या सखाओं ने कुछ ऊंच-नीच कह दिया? तो भी ठाकुर जी ने मना में सिर हिलाया।

मैया बोली- तो हमने कुछ कर दिया तेरा कुछ? तो भी ठाकुरजी ने मना में सिर हिलाया। बाबा बोले तो हमने कुछ किया है क्या? तो भी ठाकुरजी ने मना में सिर हिलाया। हमसे कोई भूल हो गई है? बोले नहीं। भूख लगी है? नहीं। तो फिर क्यों रो रहे हो? कुछ पहनेगा? नहीं। अरे लाला रोने को कोई हेतु तो बता। बालक ज्यादा रोते हैं ना तो उनकी हिचकी

बंध जाती है। ठाकुर जी की हिचकी बन गई। ठाकुर जी ने हिचकते-हिचकते ही कहा- बाबा आज सवेरे-सवेरे ही सखा मोहे से कहे कि कन्हैया तू तो धींगरा बन गयो है तो भी बछड़ा ही चरावे है। अब मैं तो बछड़ा नहीं चराऊंगो। मैं आज से गैया चराऊंगा। तो बाबा बोले- हे भगवान! हे नारायण! कहा बताओ कि ललुआ विचित्र है। यह विलक्षण बालक हमारे नंदालय में आयो है। गैया चराने के लिये रो रहा है! ग्वारिया का छोरा गैया ही चरायेगा और क्या करेगा।

देख लला हम सब गोप हैं, गैया चराना हमारा धर्म है, लेकिन जो कछु करें शास्त्र विधि को समादर करते हुए करें। बहुत ध्यान से सुनें। हमारे यहाँ पहले बहुत विचार था। यहाँ तक की हल किस मुहूर्त में हम जोतें, आज भी कर्षण मुहूर्त लिखा रहता है पंचांग में किस मुहूर्त में हल जोतें, बीज बोने का मुहूर्त, फसल काटने का मुहूर्त, गृह प्रवेश का मुहूर्त, विवाह का मुहूर्त होता है। सब मुहूर्त होते हैं। अरे राम जी कहाँ तक कहें गर्भाधान का भी मुहूर्त होता है। आज की स्थिति में गर्भाधान के मुहूर्त की चर्चा करें तो लोग हंसी उड़ाएंगे। कहेंगे यह क्या बोल रहा है बाबा।

एक राजा बड़े धर्मिष्ठ थे। वैदिक धर्म में उनकी बड़ी श्रद्धा थी। अपने विद्वान कुल पुरोहित से पूछ करके ही शास्त्र विधि से सब कार्य करते थे। कुल पुरोहित ने सर्वोत्तम मुहूर्त बताया और सर्वोत्तम मुहूर्त में राजा ने गर्भाधान किया और एक राजकुमार उत्पन्न हुआ। अब राजकुमार 5 वर्ष का हो गया। रानी ने कहा दूसरी संतान चाहिए, एक से तो काम नहीं चलेगा। राजा ने फिर अपने पुरोहित को मुहूर्त पूछा। पुरोहित ने कहा कि राजन, हमारे ध्यान में है क्योंकि मैं आपका पुरोहित हूँ और अभी आपको जैसी संतति चाहिए वैसा मुहूर्त आया नहीं है। इसलिए ब्रह्मचर्य व्रत का ही पालन करें और वैदिक धर्म का पालन करें। दूसरे बेटे की चाहत में रानी को शांति नहीं हो रही थी। कुछ दिन बाद उसने फिर राजा से कहा कि अभी तक मुहूर्त नहीं आया? राजा ने कहा-पंडितजी से पूछता हूँ। तो राजा ने फिर पंडित जी से पूछा कि रानी की इच्छा ज्यादा हो रही कि कोई दूसरी संतान हो। पुरोहित जी ने कहा- ध्यान है, मुहूर्त आते ही बता दूंगा। राजा ने कहा अच्छा ठीक है।

तीसरी बार रानी ने कहा कि अब हमें मुहूर्त नहीं चाहिए। तुम पंडितजी से पूछना कि क्या हमारे लिए तो 5-6 वर्ष हो गए मुहूर्त नहीं आया दूसरे बालक का और तुम्हारे यहाँ लाईन लग रही है। जरा, झपटुआ, लेंगा, पेंगा तमाम इकट्ठे हो रहे हैं तुम्हारे यहाँ। तो क्या तुम्हारे लिए रोज मुहूर्त आता है और हमारे लिये एक भी मुहूर्त नहीं आया?

राजा ने पुरोहित जी से कहा कि रानी तो थोड़ी दुखी हो रही है उन्होंने ऐसा ऐसा है। तो पंडित जी महाराज ने कहा ठीक हैं, हम उत्तर देंगे। पुरोहित जी महाराज महल में आये। राजा ने प्रणाम किया। राजा ने बड़े आदर पूर्वक बैठाया पण्डित जी को। पण्डित जी बोले कि सेवकों से हमारे बालकों को बुलवायें। सेवक को बुलाने भेजा। सभी के सभी आ गये। आकर न राजा को प्रणाम, न रानी को प्रणाम और न ही पिताजी को प्रणाम किया। आकर सीधे पण्डितजी को लद गये। कोई चोटी खींच रहा है, कोई कान खींच रहा है, कोई लांग पकड़ के खींचे कोई टांग पकड़ के खींचे दादा-दादा हमको क्यों बुलाया? कुछ खाने को हो तो दो। सब हंसने लगे। सब बालकों को मिठाई देकर, दक्षिणा देकर विदा किये।

इसके बाद पण्डितजी ने कहा- सेवकों को भेजकर राजकुमार को बुलावें। वे बालक सब चले गए तो राजा ने सेवकों को भेजकर राजकुमार को बुलाया। राजकुमार बड़ी सभ्यता से आया और आकर उसने सबसे पहले पुरोहितजी को साष्टांग प्रणाम किया। दाएं हाथ से दाहिने चरण का स्पर्श किया, बाएं हाथ से बाएं चरण का स्पर्श किया। पुरोहितजी ने मंत्र उच्चारणपूर्वक आशीर्वाद दिया।

राजकुमार ने फिर अपनी जनमदात्री माता को इसी विधि से प्रणाम किया, फिर पिताजी के चरणों में प्रणाम किया है फिर हाथ जोड़कर सर झुका कर कहा आपने मुझे याद किया क्या आज्ञा है। तीनों मुस्कुरा गए, बोले कुछ खा लो इसलिये बुलाये। फिर राजकुमार चला गया।

पंडित जी ने कहा महारानी जी मुहूर्त से चाहिए तो ऐसा बेटा होगा और बिना मुहूर्त के होंगे तो आपने देख लिया हमारे लाईन जो लग रही है पर सभी बिना मुहूर्त के हैं। इसलिए अब हम तो ब्राह्मण हैं हमारे बिना मुहूर्त के भी हो जाएंगे तो कोई बात नहीं काम चलेगा उनका, पर आप राजा हैं आपके यहाँ कोई उटपटांग आ गया तो आप क्या करोगे। हंसने की बात नहीं है, बात बड़ी गहराई की है। हर काम मुहूर्त से। आपको सुनकर और हंसी आएगी चोरी भी मुहूर्त से।

श्रीमद् वाल्मीकि रामायण में उल्लेख है गिदराज जटायु ने कहा- हे श्रीराम! रावण ने बिन्द नामक मुहूर्त में जानकी का हरण किया है मुहूर्त में चोरी नहीं की रावण ने। इसलिए इस मुहूर्त में जो कोई व्यक्ति कार्य करता है वह कुल खानदान सहित नष्ट हो जाता है। तुम चिंता मत करो रावण कुल खानदान सहित नष्ट हो जाएगा। लो हमारे यहाँ के पक्षियों को भी मुहूर्त का ज्ञान।

तो बिना मुहूर्त के कोई काम नहीं। दुकान खोलना तो मुहूर्त से, कोई नया काम करना तो मुहूर्त से, हर चीज मुहूर्त से, विवाह संस्कार में तो मुहूर्त का विशेष ध्यान रखना चाहिए और विवाह संस्कार में वर्तमान में सबसे ज्यादा उपेक्षा मुहूर्त की होती है। पंडित जी जो मुहूर्त शोध करते हैं ग्रह गोचर के अनुसार उसमें तो होता ही नहीं। दिया मुहूर्त वाला समय तो बैंड बाजे वाले, फोटो कैमरा वाले, नाचने गाने वाले, तमाशा करने वाले खा जाते हैं और बिना मुहूर्त के मंडप प्रवेश होता है वह भी जूता पहन कर मंडप में प्रवेश हो जाता है। देवता विराजे हैं और दूल्हा जूता पहने चला गया और इस पंडित जी को सबसे श्रेष्ठ विद्वान माना जाता है जो 5-7 मिनट में मंगलम भगवान विष्णु करवा दे। वह विधि वाली बात करो क्या जल्दी करो, जल्दी करो। सारी रात क्या भामर पढ़ाओगे?

विवाह की सजावट में चार-चार करोड रुपए खर्च करेंगे और जाने कितना करोड़ रुपये विवाह में खर्च करेंगे और ब्राह्मण देवता उनको 10 5000 की भी विदाई नहीं देंगे वह विवाह संस्कार कराने की। 10-11 हजार देने वाले भी भाग्य से कोई एक आध होंगे, नहीं इतना भी नहीं देंगे फिर कहेंगे पंडित जी आपने कैसी कुंडली मिलाई, आपने किस लग्न में विवाह कराया। अभी तो चार-छः महीना हुए नहीं और अलग-अलग होने की बात होने लगी। कहते हैं अलग-अलग होने के कागज पर दोनों पक्षों के हस्ताक्षर हो गये और दायर हो गए हैं कोर्ट में। आपने क्या किया पंडितजी 6 महीने में ही गड़बड़ हो गई।

बैंण्ड बाजे वाले भी कैसे होते हैं कि विदाई में दोनों हंसों का जोड़ा बिछुड़ गया वाला गीत गाते है। तो सब काम बिना मुहूर्त के हुआ, उटपटांग हुआ, पंडितजी को कहाँ तक दोष दिया जाय।

यह बात हम हंसाने के लिये नहीं कह रहे हैं। इसे गम्भीरता से लेना चाहिये। हमें अपनी सनातन संस्कृति का, सनातन संस्कारों का, ज्योतिष विज्ञान आदि धर्म ग्रंथो का अत्यंत श्रद्धापूर्वक आदर करना चाहिए और यथासाध्य विधि का पालन तो करना ही चाहिए उसी में सुख है, उसी में समृद्धि है, उसी में सब कुछ है। मुहूर्त की बड़ी महिमा है।

तो नंदबाबा बोले कि हम लोग ग्वारिया हैं हम सब कार्य शास्त्र विधि से करते हैं। गोचरण का मुहूर्त आएगा, पंडित जी पंचांग खोलेंगे मुहूर्त बताएंगे पंडितजी शांडिल्य महर्षि तत्काल आ गए। आते ही शांडिल्य महर्षि ने पूछा कि ...शेष अगले अंक में।

बिना गोमाता के ठाकुर सेवा नहीं हो सकती

(पू. मलूकपीठाधीश्वर महंत श्री राजेन्द्रदासजी महाराज)

बहुत ध्यान से सुनें- हमारे धर्म ग्रंथो के अनुसार बिना गाय के न तो भगवत सेवा हो सकती है और न ही भगवतों की सेवा हो सकती है। बिना गाय के ठाकुर सेवा और संत सेवा सम्भव नहीं है। बहुत प्राचीन ग्रंथ है वीर मित्रोदय ग्रंथ के पूजा प्रकाश में यह बात स्पष्ट लिखी हुई है कि मंदिर निर्माण कोई करें और मूर्ति प्रतिष्ठा भी करें कितु यदि भगवत सेवा के लिए, विग्रह की सेवा के लिए गोदान नहीं करता है, गौशाला मंदिर के साथ नहीं बनाता है तो उस मंदिर बनाने वाले को, प्रतिष्ठा कराने वाले को भी सम्पूर्ण पुण्य की प्राप्ति नहीं होती है अपितु पूजा में अपराध बनने के कारण उसे प्रत्वाय होता है, उसे दोष लगता है। प्रतिष्ठा करा कर भी उसको दोष लगता है स्पष्ट लिखा है।

आज मंदिर तो बहुत बनते चले जा रहे हैं लेकिन जिन गोमाता के बिना मंदिर बिहारी की सेवा संभव नहीं है, वहाँ गोशालाएं नहीं बनती। आप विचार करें हर मंदिर की एक गोशाला हो जाए और हर मंदिर में यह निश्चय हो जाए कि ठाकुर जी की जो गोशाला है ठाकुर जी की जो गौ माताएं हैं उन्हीं के दूध दही घी से बने हुए नए नैवेद्य का भोग धराया जाएगा इतना ही निश्चय भारतवर्ष के मठ मंदिर कर लेवें और यह कोई अलग से नहीं करना यह हमारे सनातन धर्म के शास्त्रों की आज्ञा है, ऋषियों की आज्ञा है। इतना ही कर ले तो गोरक्षा हो सकती है। बड़ी सहजता से सरलता से हो सकती है। नारायण ज्यादा श्रम नहीं पड़ेगा। अब उदाहरण दे रहे हैं आपको। बिहारी जी से कितने लोग जुड़े हुए हैं, सारी धरती के लोग जुड़े हुए केवल दिल्ली आगरा और मुंबई कोलकाता ही नहीं, जहाँ-जहाँ वृंदावन की भूमि से जुड़े हुए लोग हैं वे जाकर बिहारी जी में आस्था जरूर रखते हैं। लोगों को पता चल जाए कि श्री बिहारी जी के मंदिर की विराट गोशाला है, हजार 2 हजार गोवंश है और बिहारी जी के भोग में, बिहारी जी के अभिषेक में, बिहारी जी के 56 भोग में रोज इन्हीं गोमाताओं के दूध, दही, घी का व्यवहार, माखन का व्यवहार होता है तो हम समझते हैं कि कोई भार मंदिर पर नहीं आएगा और 2 हजार नहीं, 20 हजार नहीं, 50 हजार गायों का पोषण भी बिहारी जी के यहाँ सरलता से हो जायेगा।

जो लोग मनोरथी हैं, भोग धरने वाले हैं वे आखिर बाजार के दूध दही आदि का पैसा भी तो देते हैं कि नहीं देते हैं, वही राशि ठाकुर जी की गोशाला में आएगी और गोशालाओं की सेवा भक्तों के सहयोग से हो जाएगी तो बिहारी जी के मंदिर की गोशाला का भार बिहारी जी के मंदिर पर नहीं पड़ेगा अपितु बिहारी जी न जाने कितने अभावग्रस्त गोशालाओं का संचालन कर लेंगे। लेकिन दुर्भाग्य हमारा यही है कि हम दिखावे में धर्म को तो बहुत करना चाहते हैं लेकिन धर्म का जो मूल है, धर्म की जो जड़ है उस ओर हमारी कोई दृष्टि नहीं है, उस और हमारा कोई ध्यान ही नहीं है।

पिछले महाराज नरसी जी के चरित्र में स्पष्ट है नरसीजी ने ठाकुरजी का मंदिर बनवाया, संत आवास बनवाये और साथ में ठाकुर सेवा के लिए गोशाला बनाई। ठाकुर सेवा बिना गोमाता के नहीं हो सकती, संत सेवा बिना गोमाता के नहीं हो सकती दास को अनुभव है। श्री ठाकुर जी की कृपा से श्री गोधाम पथमेड़ा और मलूक पीठ के संत बहुत सुखी है। क्यों? क्योंकि यहाँ गोमाताएं हैं और सबको ताजा दूध, दही, घी, छाछ सब मिल जाता है। यहाँ के सभी संत गोव्रती हैं।

वेदवाणी में गो महिमा

संकलित

ॐ इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमायकर्मणऽ आप्यायध्वमध्‍याऽइन्द्राय भागं प्रजावतीर- नमीवाऽअयक्ष्मा मा वस्तेनऽईशत माघश सोध्रुवाऽअस्मिन् गौपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि।

हे शाखे ! रस और बल प्राप्त करने के लिए हम तुझे स्वच्छ करते हैं। तथा पलाश यज्ञ की फल रूप जो वृष्टि है, उसके निमित्त हम तुझे ग्रहण करते हैं। हे गोवत्सो! तुम खेल-स्थल में हो, अतः माता से अलग होकर दूर देश में द्रुतगति से जाओ। वायु देवता तुम्हारी रक्षा करने वाले हों। हे गौओ! ज्योतिर्मान परमात्मा तुम्हें श्रेष्ठ यज्ञ-कर्म के निमित्त तृण गोचर भूमि प्राप्त कराए, जो प्रेरणादायक और दिव्य-गुण संपन्न है। हे अहिंसक गौओं! निर्लेप मन से और निर्भय होकर तुम तृण रूप अन्न का सेवन करती हुई इन्द्र के निमित्त भाग रूप दुग्ध को सब प्रकार से वर्धित करो। रोगरहिता, अपत्यवती! तुम इस यजमान के आश्रय में रहो। कोई चोर आदि दुष्ट तुम्हें हिंसित न करे। उच्च स्थान पर अवस्थित होती हुई हे शाखे! तू सब पशुओं की रक्षा करने वाली रहो।

वसोः पवित्रमसि द्यौरसि पृथिव्यसि मातरिश्वनो घर्मो ऽसि विश्वधाऽ असि। परमेण धाम्ना दृहस्व मा ह्वार्मा यज्ञपतिर्ह्वार्षीत्।

हे दर्भमय, पवित्रे! तू इन्द्र के कामनायुक्त दुग्ध का शुद्धिकरण कार्य वाली है। तू इस स्थान पर रह। हे दुग्ध के पात्र! तू वर्षा प्रदान करने वाला प्राप्ति में सहायक होता है। तू मिट्टी से बना है, अतः पृथ्वी ही हैं। हे मृत्तिका पात्र! वायु का तू संचरण स्थल है तथा हवि के धारण करने में त्रैलोक्य रूप है। अपने दुग्ध धारण वाले तेज से युक्त हो। यदि तू टेढ़ा-मेढ़ा हुआ तो अनेक विघ्न उत्पन्न हो जाएंगे, अतः यथास्थित ही रहना।

वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्।देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः।

दुग्ध को शोधित करने वाले हे पवित्र छन्ने! इस हांडी पर सहस्र धार वाले दुग्ध को क्षरित कर। सैकड़ों धार वाले छन्ने द्वारा शुद्ध हुआ दुग्ध परमात्मा पवित्र करे। दुग्ध का दोहन करने वाले हे पुरुष ! इन गौओं में से तूने किस गौ को दुहा है।

सा विश्वायुः सा विश्वकर्मा सा विश्वधायाः। इन्द्रस्य त्वा भाग सोमेनातनच्मि विष्णो हव्यर्थ रक्ष।

हमने दोहन की हुई जिस गौ के बारे में तुझसे पूछा है, वह गौ यज्ञकर्ता ऋत्विजों की आयु बढाने वाली है तथा यजमान की भी आयु वृद्धि करती है। सब कार्यो को संपादित करने वाली उस गौ के द्वारा सभी कृत्य संपन्न होते हैं। वह गौ सभी यज्ञीय देवताओं की पोषक है। जो दुग्ध इन्द्र का भाग है, हम उसे सोमवल्ली के रस से जामन देकर जमाते हैं। हे सबमें व्याप्त और सबके रक्षक ईश्वर! यह हव्य रक्षा के योग्य है, अतः इसकी रक्षा कर।

एह यन्तु पशवो ये परेयुर्वायुर्येषां सहचरं जुजोष। वायु भगवान गायों के साथ चलकर उनकी रक्षा करते हैं। **त्वष्टा येषां रूपधेयानि वेद।** सूर्य भगवान गाय के गर्भ के अन्दर बछड़े को अपना स्वरूप देते हैं। **अहर्जातस्य यन्नाम तेना वः संसृजामसि।** गो से प्रार्थना करते हैं कि हमें पुत्रपौत्रादि से सम्पन्न करे। **आ गावः असमे भद्रमक्रन्।** गो हमारा कल्याण करने आये।

न ता अर्वा अश्नुते। ये गाय बाघ जैसे हिंसक जानवरों से आक्रमित न हो।

इमा या गावः स जनास इंद्र। इन्द्रादि देवताओं को भी गो अपने दूध, दही, घी से पुष्ट करती है। देवताओं का शरीर गोमाता का दिया हुआ है।

गायत्राः पशवः। गो और गायत्री मंत्र एक दूसरे से भिन्न नहीं है।

श्री राम कथा

पू. आचार्य श्री दयानंद शास्त्री जी महाराज

पिछले अंक से आगे........

भवानीशंकरौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तःस्थमीश्वरम्।।

श्रद्धा और विश्वास के स्वरूप श्री पार्वतीजी और श्री शंकरजी की में वन्दना करता हूँ जिनके बिना सिद्धजन अपने अंतकरण में स्थित ईश्वर को देख नहीं सकते।

वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शंकररूपिणम्।
यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते।।

ज्ञानमय, नित्य, शंकर रूपी गुरु की मैं वन्दना करता हूँ, जिनके आश्रित होने से ही टेढ़ा चन्द्रमा भी सर्वत्र वन्दित होता है।

सीतारामगुणग्रामपुण्यारण्यविहारिणौ।
वन्दे विशुद्धविज्ञानौ कवीश्वरकपीश्वरौ।।

श्री सीतारामजी के गुणसमूह रूपी पवित्र वन में विहार करने वाले, विशुद्ध विज्ञान सम्पन्न कवीश्वर श्री वाल्मीकिजी और कपीश्वर श्री हनुमानजी की मैं वन्दना करता हूँ।

उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीम्।
सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोऽहं रामवल्लभाम्।।

उत्पत्ति, स्थिति (पालन) और संहार करने वाली, क्लेशों को हरने वाली तथा सम्पूर्ण कल्याणों को करने वाली श्री रामचन्द्र जी की प्रियतमा श्री सीताजी को मैं नमस्कार करता हूँ।

यन्मायावशवर्ति विश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवासुरा
यत्सत्त्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहेर्भ्रमः।
यत्पादप्लवमेकमेव हि भवाम्भोधेस्तितीर्षावतां
वन्देऽहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिम्।।

जिनकी माया के वशीभूत सम्पूर्ण विश्व, ब्रह्मादि देवता और असुर हैं, जिनकी सत्ता से रस्सी में सर्प के भ्रम की भाँति यह सारा दृश्य जगत सत्य ही प्रतीत होता है और जिनके केवल चरण ही भवसागर से तरने की इच्छा वालों के लिए, एकमात्र नौका हैं, उन समस्त कारणों से पर (सब कारणों के कारण और सबसे श्रेष्ठ) राम कहलाने वाले भगवान हरि की मैं वंदना करता हूँ।

श्रद्धा हो तो खोज करें और विश्वास हो तो प्राप्ति करें। तो दोनों अपेक्षित हो गये न। तो श्रद्धा और विश्वास रूपपिणे श्री पार्वतीजी और श्री शंकरजी की हम सब वंदना करते हैं।

कहा अगर कोई बिना श्रद्धा और बिना विश्वास की उपासना करें तो कैसा होगा? मानो बिना श्रद्धा और विश्वास की ही उपासना में किसी ने सिद्धि प्राप्त कर लिया हो तो क्या होगा? यहाँ सिद्ध शब्द का प्रयोग है वो ध्यान देने योग्य है। श्रद्धा नहीं है और विश्वास भी नहीं है पर साधना हो रही है तो बिना विश्वास और बिना श्रद्धा की साधना करने वाले साधक है तो उन्हें क्या प्राप्त होगा क्या नहीं प्राप्त होगा? कहा- ''याभ्यां विना न पश्यन्ति'' वे देख नहीं पाते हैं। क्या देख नहीं पाते हैं? कहा- ''स्वान्त:स्थमीश्वरम्'' अपने भीतर बैठे परमात्मा को देख नहीं पाते हैं, ईश्वर के उनको दर्शन नहीं होते हैं। सिद्धा कौन? बोले जिनका नाम सिद्धों में पूजा जा रहा हो, जो सिद्ध की अवस्था को प्राप्त कर गया हो, सिद्धि की ख्याति जिनकी बढ़ गई हो। ये सारी बातें हो सकती है, पर आत्मा में ठाकुर का दर्शन वो नहीं कर सकते हैं। सिद्ध होना एक साधारण सी बात है। सिद्ध होना कोई लंबी चौड़ी बात नहीं है।

आपने विवेकानंद जी का चरित्र कभी पढ़ा होगा। एक बार ऐसे ही गंगा के किनारे महात्मा विवेकानंद अपने एक साथी के साथ गंगा तट पर घूम रहे थे तो उनका एक साथी जिसने अपने जवानी के 20 साल तक सिद्धि में लगाया, वह बोला कि हमको

सिद्धि प्राप्त कर ली है। हम पानी पर पैदल चल सकते हैं। 20 साल का जीवन लगाकर क्या पाया? कि पानी पर पैदल चल सकते हैं। ध्यान दिया जाए हमारे बहुत से साधक इन शक्तियों के पीछे अपनी जवानी को लगा देते हैं, बुढ़ापा लगा देते हैं पर जो लक्ष्य होता है मानव जीवन का उससे अपरिचित से रहते हैं। सिद्धों के लिए सांकेतिक एक निर्देश ही समझो कि हमें करना क्या चाहिए? हमने 20 साल तक साधना की है और पानी पर हम पैदल चल सकते हैं। बहुत अच्छी बात है, तुमने तो बहुत बड़ा लाभ ले लिया। जिसको आप ऐसा कहेंगे तो वह अपनी सिद्धी दिखाएगा ही। तो उस भक्त ने पानी पर पैदल चलकर दिखा दिया। वह पैदल गया गंगा जी पर उस पार और पानी पर पैदल वापिस आ गया। पानी पर पैदल चलकर गया और पैदल चलकर आया।

विवेकानंद जी ने कुछ कहा तो नहीं पर वहाँ एक नाविक खड़ा था उसको एक चवन्नी पकड़ा दिए और नाव पर चढ़ गए। नाविक को सवारी मिल गई, किराया मिल गया तो वह देखते-देखते ही चुपचाप नाव को गंगा पार ले गया और वापिस लेकर आ गया। पच्चीस पैसे में विवेकानंद जी ने गंगा के उस पार की यात्रा पूरी की ओर लौट के इस पार आ गए फिर उस मित्र से आकर मिले कि मित्र मैंने तुम्हारी सिद्धि का मूल्यांकन करने का चिंतन किया, 20 साल की आयु लगाकर तूने जो पाया इसकी कीमत चार आने है।

भगवन मानव देह साधारण उपलब्धियाँ के लिए कहाँ है कि हम अपनी पूरी जवानी लगाकर हम पानी पर पैदल चलना सीखें। यह सब कौन सी उपलब्धि हुई? पानी पर पैदल चलने वाला भी मरकर के नरक भी जा सकता है। इसलिए ऐसी सिद्धी किसी काम की नहीं है। जब तक अंत:करण में विराजे हुए परमात्मा हमारे सामने नहीं आ जाए। एक कवि का चिंतन है भूलो मत भूलोक और नभ को मथने वालों, कुछ खोज रहे तो खुद को खोज निकालो। अंतरिक्ष का मंथन हो गया, पृथ्वी को मंथन करके रसायन खनिज निकाल लिए गए पर हाड़मांस के 70 किलो के शरीर का आज तक मंथन हम लोग नहीं कर पाए। हम कौन हैं? अरे कुछ खोज रहे तो खुद को खोज निकालो। अंतरिक्ष में नौ की जगह 12 ग्रह बनाने से कोई बात बनी नहीं। पृथ्वी का दोहन शोषण करके रसायन और खनिज निकलने से भी बात पूरी हुई नहीं। हाड़मांस में छिपी हुई आत्मा का दर्शन जब तक नहीं हुआ, आत्म तत्व से जब तक परिचित नहीं हुए तब तक हमारी खोज अभी पूरी नहीं हुई। भूलो मत भूलोक और नभ को मथने वालों, कुछ खोज रहे हो, कुछ खोज रहे तो खुद को खोज निकालो और अंत:करण में परमात्मा दिख जाए तो हमारे खोजपूर्ण हुई।

बाबा ने बड़ा सांकेतिक दार्शनिक चिंतन किया- ''याभ्यां विना न पश्यन्ति'' जिनके जीवन में उत्कट श्रद्धा ना हो और अटूट विश्वास ना हो वह सिद्ध हो सकते हैं पर अंत:करण के ईश्वर का दर्शन नहीं कर सकते। ''याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धा स्वान्त:स्थमीश्वरम्'' अपने भीतर बैठे, अपने घट में बैठे परमात्मा को देख नहीं पाते हैं, ईश्वर के दर्शन नहीं कर सकते। कब तक? जब तक श्रद्धा का संबल ना हो विश्वास की अटूट पूंजी ना हो। इसलिए जीवन में उमा महेश्वर हमारे उपासस्य हो और उनकी कृपा से हमारी श्रद्धा पुष्ट हो, हमारा विश्वास अटूट हो। श्रद्धा विश्वास यदि हमारा बाल बन जाएगा तो भगवान जाएंगे कहाँ, वे जाएंगे कहाँ, उन्हें मिलना ही होगा।

इसलिए उपायों पर ध्यान दीजिए कि जो-जो साधन मेरे लिए सफलता के मूल में आता है उनको टिक लगाओ कि ये हमारे जीवन में होना ही चाहिए और कहाँ से मिलेगा उस बाजार में जाना चाहिए। बोलो भक्तवत्सल भगवान की जय।

आइये! तीसरे मंत्र में बाबा ने कहा- वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शंकररूपिणम्। यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते।। बहुत सुंदर बात है। कहा- बोधमय, ज्ञानमय गुरुदेव भगवान का हम सब वंदन करते हैं। ज्ञान संपन्न, तत्व सम्पन्न बोध सम्पन्न हैं हमारे गुरु भगवान हम उनकी वंदना करते और शंकर के ही रूप हैं वे शंकर के ही रूप हैं। कहा कैसे शंकर के रूप हैं? यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते। शंकर भगवान की कौन सी विशेषता को यहाँ निकाला गया? कौन सी विशेषता पर प्रकाश डाला? कहा- यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते| भगवान शिव का संग होने के कारण टेढ़ा चंद्रमा भी पूजित हो गया। बोलो भक्तवत्सल भगवान की जय।

सीधे की पूजा तो होती है, पर टेढ़े की पूजा नहीं होती है। लेकिन टेढ़ा चंद्रमा जब भगवान शंकर के मस्तक पर स्थान प्राप्त कर लिया है तो वह चंद्रमा पूजित हो गया। दूज का चांद आज भी लोगों के लिए दर्शन का विषय बन जाता है। दूज के चांद के लिए लोग टकटकी लगाते हैं देखने के लिए वो इसलिए नहीं कि वह दूज का चांद है, बल्कि इसलिये कि वह टेढ़ा है। पूर्ण चंद्रमा में उतनी लालसा हमारी नहीं जितनी कि दूज के चांद की रहती है। कहा कि दूज का चांद इतना पूजित हुआ क्यों? क्योंकि शंकर के माथे चढ़ गया। बोलो भक्तवत्सल भगवान की जय।

ऐसे ही जीवात्मा साधक जो अपने गुरुदेव के माथे चढ़ जाता है वो वक्रोपि (टेढ़ा) भी है, पापी भी है, नीच भी है, दुष्ट भी है, चारित्रिक मलिनता भी है, अनेकों अवगुणों से युक्त होकर भी गुरु शरणागत हो गया है तो आत्मतत्व का अधिकारी बन जाता है। वो भी पूजा जाता है, पूजित हो जाता है। वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शंकररूपिणम्। जिन गुरु का आश्रय प्राप्त करने से बाद हमारे जैसे मलिन जीव भी पूजा पा ले, ऐसे में पहले मलीनता नहीं, हमारे अभी दोष नहीं गिने जाते विशेषता देखी जाती हैं, ऐसे जैसे भगवान शंकर के माथे पर टेढ़े चंद्रमा पूजे जाते हैं। इसलिए गुरु शरणागत हो और संसार में हरि के आश्रय को प्राप्त कर आत्मकल्याण करें।

हरि भक्तों चौथा मंत्र में बाबा तुलसीदास ने कहा- सीतारामगुणग्रामपुण्यारण्यविहारिणौ।वन्दे विशुद्धविज्ञानौ कवीश्वरकपीश्वरौ।। ध्यान दिया जाए वन जाने का मन करे तो हम लोग भी घबराते हैं। वन इतना है नहीं जितना चाहिए, कटने लग गया है। सब साधू बनना चाहे तो कुटिया भी नहीं पूरी हो पाएगी। ये तो बेचारे गिनती के कुछ लोग आते हैं जिससे गुजारा हो गया। सब मन बना ले कि हम रहेंगे तो यहीं तो फिर साधन हो नहीं सकता क्योंकि व्यवस्था रोज की तो है नहीं। हमको अपने आप में स्वतंत्र साधन का अवलंबन करना होगा। हम कहाँ जाएं हम ग्रहस्थियों को भी मन करता है जंगल जाएं, क्योंकि साधु जंगल में जाकर आत्म साधना करते हैं, आत्म कल्याण करते हैं। हम लोगों को भी आत्म कल्याण की भावना उत्कट हो जाए और जंगल जाना पड़ जाए तो ऐसे में जंगल ढूंढो वह जंगल कहां मिलेगा? कहा श्रीमद रामचरितमानस में वह जंगल तैयार है।

किसी को जाना हो तो जाइये, वहाँ वन में जाकर आत्म कल्याण करिये। वो वन क्या है? सीतारामगुणग्रामपुण्यारण्यविहारिणौ। श्री सीतारामजी के पवित्र यश जहाँ है वह घोर जंगल है। वही पुण्य वन है, वही पुण्यारण्य है। वह पुनीत वन है। भगवान के यशोगान जहाँ होते हों वहाँ जाकर बैठ जाओ, आपकी भलाई उसी पल हो जायेगी। जहाँ रामजी की कथा के जंगल लगाये गये हों उन घोर जंगल में बैठकर अपने आत्म कल्याण को साधें। इसमें दो महात्मा का नाम आया ये दोनों जंगल में ही रहते हैं। ये वनस्पति के जंगल में नहीं रहते, वे सीतारामगुणग्राम पुण्यारण्य में रहते है। इस पुण्य वन में ये दोनों घूमते-फिरते हैं, विहार करते हैं। ......शेष अगले अंक में

शिव महापुराण कथा

(पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्णजी महाराज)

(वेद मंदिर अहमदाबाद)

पिछले अंक से आगे.....

भैया शिव की पूजा करने पर, शिव का अनुष्ठान करने पर हमें धन मिल गया, पद मिल गया, पैसा मिल गया, प्रतिष्ठा मिल गई तो यह न समझ लीजिए कि शिव की कृपा मिल गई। मेरे भाई बहन जब राम चरणों में प्रेम हो, कृष्ण चरणों में प्रेम हो तब समझना शिव की कृपा मिल गई। शिव की कृपा चित्त शुद्ध होने पर मिलती है। भगवान शिव कृपा करते हैं निर्मल चित्त वाला व्यक्ति होता है ना उसको भगवान शिव सहज में प्राप्त हो जाते हैं।

इसलिए कैसे निर्मल चित्त हो यह आप बताइए। यह शौनकादि ऋषिगणों ने सूतजी से प्रश्न किया। करुणा निधान करुणा निधान! हे शौनकादिक ऋषिगणों आप लोगों के प्रश्न का उत्तर शिव महापुराण है और शिव महापुराण को कहने वाला कोई और नहीं है, शिव महापुराण को प्रकट करने वाले खुद शिवजी हैं। जानते हैं क्यों? क्योंकि ठाकुर जी ने जो लीलाएं की वह तो प्रकट करके सबको दिखाया, उसमें किसी को साक्षी बनाया। माखन चोरी की लीला की तो ब्रजवासी उसके साक्षी, गीता उपदेश दिया तो उसमें अर्जुन साक्षी है, वन गमन किया तो उसमें लक्ष्मणजी साक्षी हैं, रावण से युद्ध किया तो उसमें हनुमान जी साक्षी है। लेकिन शंकर भगवान जो लीला करते हैं, जो चरित्र करते हैं, उसको कोई समझ ही नहीं पाता है। वे किसी को साक्षी नहीं रखते हैं। क्योंकि किसी को बताकर नहीं करते और भगवान शिव चाहते भी नहीं कि मेरे चरित्र उजागर हो, मेरे कार्य, मेरी एक भी करनी, मेरी लीला उजागर हो व मेरी पूजा करो। अगर भगवान शिव की अपने को प्रतिष्ठापित करने में रुचि होती ना तो लिंग के रूप में नहीं स्वरूप के रूप में प्रकट होते। स्वरूप के रूप में बाबा प्रकट होते। जैसे ठाकुर जी प्रकट होते हैं, बांके बिहारी जी प्रकट हुए, राधा रमन जी प्रकट हुए, ऐसे ही शिवजी भी प्रकट होते और फिर हमारे शिव जी तो 'कपूर गौरं' इतने सुंदर हैं करुणा निधान! पर वे चाहते ही नहीं कि लोग मुझे देखे, मुझमें लगे। एक एक क्षेत्र है, एक-एक क्षेत्र है, वहाँ रंगनाथ भी हैं और रामनाथ भी। पहले किसका है वो क्षेत्र? रामनाथ का। फिर वहाँ रंगनाथ पधारे हैं। रामनाथ वहाँ छोटे से लिंग के रूप में विराजे हैं और रंगनाथ वहाँ-

शान्ताकारम् भुजगशयनम् पद्मनाभम् सुरेशम्
विश्वाधारम् गगनसदृशम् मेघवर्णम् शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तम् कमलनयनम् योगिभिर्ध्यानगम्यम्
वन्दे विष्णुम् भवभयहरम् सर्वलोकैकनाथम्।।

वहाँ स्वयं एक छोटे से लिंग के रूप में विराजे हैं और अपने प्यारे श्यामसुन्दर को, अपने प्यारे नारायण को पूरे क्षेत्र का स्वामी बना दिया। प्रभु! इसलिये फिर शिवजी के गुणगान कौन गावे? किसको पता है शिव के चरित्र क्या है? इसलिए ऋषियों के आग्रह पर, ऋषि मुनियों के आग्रह पर भगवान शिव ने ही स्वयं शिव महापुराण के तत्व को प्रकट किया है। फिर वेदव्यास जी ने उसका विस्तार किया है।

एतच्छिवपुराणं हि परमं शास्त्रमुत्तमम्।
शिवरूपं क्षितौ ज्ञेयं सेवनीयं च सर्वथ।।

करूणा निधान! शिव महापुराण को शिवजी का ही वाङ्गमय स्वरूप समझना चाहिये। ऐसा नहीं समझना चाहिये कि यह ग्रंथ है, ग्रंथ नहीं है, शिवजी का ही स्वरूप है।

अरे भाई बहन! हर किसी की शिव महापुराण पढ़ने-सुनने में प्रीति होती नहीं है। कोई क्यों सुने भाई? क्यों नहीं होती है शिव महापुराण सुनने की प्रीति? क्योंकि शिव महापुराण की जो कथाएं हैं वे प्रचलित नहीं है। श्रीमद् भागवत महापुराण की कथाएं

तो प्रचलित हैं, श्रीमद् रामायण की कथाएं तो प्रचलित हैं लेकिन शिव महापुराण की कथाएं प्रचलित नहीं हैं। इसलिए भैया कोई साधारण व्यक्ति कभी भी शिव महापुराण को सुनने के लिए तत्पर नहीं होता है। यह तो कोई महाभाग्यशाली हो और भक्ति रस से भरा हुआ हो उसी के मन में आता है कि मैं शिवजी की कथा सुनुं।

पठनाच्छ्रवणादस्य भक्तिमान्नरस्तमः।
सद्यः शिवपदप्राप्तिं लभते सर्वसाधनात्।

भगवान शिव की कथा सुनने वाले श्रोता को, उसके हृदय को शिवरूप बना देती है, शिवरूप यानि शुद्ध हो जाता है। शिव कथा की यह महिमा है। शिव महापुराण का यह महात्म्य है भाई हृदय शुद्ध हो जाता है।

एक कथा आती है शिव महापुराण के महात्म्य एक नगरी में देवराज नाम का एक ब्राह्मण रहता था। जन्म तो ब्राह्मण कुल में हुआ किंतु कुसंग में पड़ गया और कुसंग में पड़कर सबसे पहले अपना आहार बिगड़ा। करुणा निधान! मुझे क्षमा करिएगा। जिस व्यक्ति का आहार बिगड़ रहा है समझ लेना चाहिए कि अब यह व्यक्ति कुसंग में पड़ने वाला है और जिसका खान-पान सुधर रहा है समझ लो यह आगे संत कृपा का पात्र बनने वाला है। वह जल्दी ही संत कृपा का पात्र बनने वाला है। मैंने अपने जीवन में देखा है कि जिन-जिन के जीवन में आहार शुद्धि हुई वे आगे चलकर संत कृपा के पात्र बने और जिन लोगों ने अपना आहार बिगाड़ा वे कहीं ना कहीं कुसंग में पड़े।

आहार बिगड़ गया उससे देवराज नाम का ब्राह्मण कुसंग में पड़ गया। उल्टी-सुल्टी स्त्रियों का संग करने लगा। गलत खान-पान करने लगा। जीवन ऐसे ही खर्च कर दिया। मेरे भाई बहन जीवन ऐसे खर्च कर दिया और बुढ़ापे में चलना फिरना सब मुश्किल हो गया और ऊपर से उसकी जो पत्नी थी उसी के झूठे पात्र में वह भोजन करता था उससे और ज्यादा बुद्धि खराब हुई। कृपानाथ किसी के साथ भी एक पात्र में भोजन करना यह बहुत उत्तम पक्ष नहीं है।

लेकिन भैया अब तो सब एक ही खा रहे हैं। पात्र सबके हाथ में अलग-अलग है लेकिन कहीं ना कहीं वह है सबका ही मिला-जुला क्या करें। यहाँ भी मेरी आयोजकों से विनती है कि जो अपने यहाँ पर भोजन प्रसाद परोसने का जो कार्य कर रहे हैं उनको यह विशेष हिदायत देने की आवश्यकता है कि भाई तुम जो भी परोसना उसे थोड़ा ऊपर से परोसना। कई बार भोजन परोसते समय जो सामग्री परोसते हैं वह पूरी झूठी थाली को टच कर देते हैं, फिर वही चम्मच वापिस भोजन सामग्री में डालते हैं जिससे सब भोजन प्रसाद सामग्री जूठी हो जाती है।

अब समझो कि खिचड़ी परोस रहे हैं तो खिचड़ी का चम्मच सीधा जूठी थाली में जब लगेगा तो उस जूठी थाली में जो चावल का, दाल का कोई कण लगा होगा वह चम्मच को लग जायेगा और वह चम्मच वापस खिचड़ी में चला गया तो पूरी खिचड़ी जूठी मानी जाएगी और फिर अब जो उसको खाएगा वह सब उन्हीं का जूठा खायेगा। खड़े-खड़े भोजन में सबसे बड़ा नुकसान यही है कि सबको एक दूसरे का जूठा लेना ही पड़ता है, कोई उपाय नहीं है। खड़े-खड़े भोजन पाने वाली व्यवस्था में थाली या प्लेट को सामग्री के बर्तन के ऊपर ना ले जाएं उससे दूरी बनाकर रखें। थोड़ी सावधानी रखनी चाहिए करुणानिधान।

अभी जो इन दिनों यहाँ भोजन आप लोगों को मिलने वाला है वो तो शिव प्रसाद है। शिव प्रसाद यानि कल्याण, शिव प्रसाद यानि मंगल। आप जूठा छोड़ेंगे तो आप अपना मंगल छोड़ रहे हैं, आप अपना कल्याण छोड़ रहे हैं इतना दोष लगने वाला है। मैं आज ऊपर बैठे-बैठे सोच रहा था कितनी सुंदर रसोई बनती है, भगवान को भोग लगता है लेकिन खाने वाले थोड़ा खाते हैं, थोड़ा जूठा छोड़ देते हैं। आप

उन्हें प्रसाद परोस रहे हैं और व उस प्रसाद को स्वाद समझ कर छोड़ देते हैं, इससे बड़ा अपराध पड़ता है।

तो कृपानाथ वो देवराज नाम का ब्रह्मण जूठा भोजन खाया, कुसंग हुआ अब जब बूढ़ा हो गया तो घर में कौन रखे।

यावद्वित्तोपार्जनसक्तः,
तावन्निजपरिवारो रक्तः।
पश्चाज्जीवति जर्जरदेहे,
वार्ता कोऽपि न पृच्छति गेहे।।
व यसि गते कः कामविकारः,
शुष्के नीरे कः कासारः।
क्षीणे वित्ते कः परिवारः,
ज्ञाते तत्त्वे कः संसारः।।

जब तक व्यक्ति धनोपार्जन में समर्थ है, तब तक परिवार में सभी उसके प्रति स्नेह प्रदर्शित करते हैं परन्तु अशक्त हो जाने पर उसे सामान्य बातचीत में भी नहीं पूछा जाता है। आयु बीत जाने के बाद काम भाव नहीं रहता, पानी सूख जाने पर तालाब नहीं रहता, धन चले जाने पर परिवार नहीं रहता और तत्त्व ज्ञान होने के बाद संसार नहीं रहता।

वृद्धावस्था आने पर किसकी पत्नी की रूचि रहती है? पत्नी ने भी छोड़ दिया। अब बुढ़ापे में भटकने लगा। एक दिन ऐसे ही भटकते-भटकते प्रयाग क्षेत्र में पहुँच गया। वहाँ कोई शिवालय था वहाँ बहुत सारे साधु इकट्ठे हुए थे वहाँ जाकर के वह बीमार पड़ गया और मंदिर के बाहर गिर् गया। अब बीमार पड़ गया, कोई भले काम किये होते तो लोग पूछते भी। उल्टा संग करके अपना जीवन चरित्र नुकसान कर लिया, बिगाड़ कर लिया। किसी ने पूछा नहीं 1 महीने तक बीमार पड़ा रहा। लेकिन भैया एक महीने के बाद भगवान शिव के पार्षद गए और उसको विमान में बिठाकर शिवलोक ले जाने लगे। उस समय यमराज जी के भेजे यमदूतों ने आकर विरोध किया कि भाई इसको कहाँ ले जाते हो, इसको कहाँ ले जाते हो। यह तो पापी है, जीवन भर परस्त्री गमन किया और कोई स्त्री का जूठा खाया। यह चरित्रहीन था, ऐसा था, वैसा था कैसे आप इसे शिवलोक ले जा रहे हो? क्या शिवलोक में ऐसे लोगों को रखा जाएगा? भगवान शिव के दूतों ने, पार्षदों ने कहा भैया शिवलोक में हर किसी को नहीं रखा जाता है पुण्यशाली व्यक्ति स्वर्ग में जाता है, पर जो पवित्र होता है वह शिवलोक में जाता है। परम पवित्र होने से शिवलोक प्राप्त होता है और प्रेमी होने से श्री हरि का धाम प्राप्त होता है। आप पुण्यवान हो, पवित्र हो कि प्रेमी हो देख लो। पुण्यवान हो तो स्वर्ग में आपका कमरा तैयार मिलेगा। पवित्र हो तो शिवलोक में आपको निवास मिलेगा और प्रेमी हो तो श्री हरि के धाम में निवास मिलेगा।

ध्यान से सुनियेगा है कुछ-कुछ मंदिरों में दर्शन की व्यवस्था बनी हुई होती है। तो वहाँ लिखा रहता है कि दर्शन की यह-यह व्यवस्था है, शॉर्टकट दर्शन, वी.आई.पी आदि दर्शन के लिये किसी की बातों में आकर और किसी को रुपया मत देना। किसी की बातों में ना आएं दर्शन यहाँ पर ऐसे होते हैं। कृपा करके किसी को रुपए ना दें। दर्शन के नाम पर यहाँ कई बिचोलिये ठग देते हैं।

ऐसे ही भैया इस लोक में, उसे लोक में जाने के लिए किसी को कुछ और जगह फसने की जरूरत नहीं है। पुण्य कर रहे हो तो स्वर्ग निश्चित मिलेगा, पवित्र रहते हो तो शिवलोक निश्चित मिलेगा और भगवान से प्रेम करते हो तो भगवत धाम निश्चित मिलेगा। भैया इसके लिए अब और किसी की बातों में आने की जरूरत नहीं और किसी की बातों में आने की आवश्यकता नहीं है।

तो यमदूतों ने कहा यह पवित्र कैसे हो गया? देवराज नाम का यह चरित्रहीन ब्राह्मण, पतित ब्राह्मण पवित्र कैसे हो गया? तब शिव के पार्षदों ने कहा- सुनो मंदिर में से आवाज क्या आ रही है? ...शेष अगले अंक मे

परमपद
(जीव का अपना असली घर)
साभार : गीता साधक संजीवनी

पिछले अंक से आगे......

विशेष बात

वास्तव में शरीर आदि का वियोग तो प्रतिक्षण हो ही रहा है। साधक को प्रतिक्षण होने वाले इस वियोग को स्वीकार मात्र करना है। इन वियुक्त होने वाले पदार्थो से संयोग मानने से ही कामनाएँ पैदा होती हैं। जन्म से लेकर आज तक निरन्तर हमारी प्राणशक्ति नष्ट हो रही है और शरीरसे प्रतिक्षण वियोग हो रहा है। जब एक दिन शरीर मर जायेगा, तब लोग कहेंगे कि आज यह मर गया। वास्तव में देखा जाय तो शरीर आज नहीं मरा है, प्रत्युत प्रतिक्षण मरनेवाले शरीर का मरना आज समाप्त हुआ है! अतः कामनाओं से निवृत्त होने के लिये साधक को चाहिये कि वह प्रतिक्षण वियुक्त होने वाले शरीरादि पदार्थो को स्थिर मानकर उनसे कभी अपना सम्बन्ध न माने।

वास्तवमें कामनाओं की पूर्ति कभी होती ही नहीं। जब तक एक कामना पूरी होती हुई दीखती है, तब तक दूसरी अनेक कामनाएँ उत्पन्न हो जाती हैं। उन कामनाओं में से जब किसी एक कामना की पूर्ति होने पर मनुष्य को सुख प्रतीत होता है, तब वह दूसरी कामनाओं की पूर्ति के लिये चेष्टा करने लग जाता है। परन्तु यह नियम है कि चाहें कितने ही भोग -पदार्थ मिल जायँ, पर कामनाओं की पूर्ति कभी हो ही नहीं सकती। कामनाओं की पूर्ति के सुखभोग से नयी-नयी कामनाएँ पैदा होती रहती हैं 'जिमि प्रतिलाभ लोभ अधिकाई'। संसार के सम्पूर्ण व्यक्ति, पदार्थ एक साथ मिलकर एक व्यक्ति की भी कामनाओं की पूर्ति नहीं कर सकते, फिर सीमित पदार्थो की कामना करके सुख की आशा रखना महान् भूल ही है। कामनाओं के रहते हुए कभी शान्ति नहीं मिल सकती 'स शान्तिमाप्नोति न कामकामी'(गीता 2।70)। अतः कामनाओं की निवृत्ति ही परम-शान्ति का उपाय है। इसलिये कामनाओं की निवृत्ति ही करनी चाहिये, न कि पूर्ति की चेष्टा।

सांसारिक भोग-पदार्थो के मिलने से सुख होता है यह मान्यता कर लेने से ही कामना पैदा होती है। यह कामना जितनी तेज होगी, उस पदार्थ के मिलने में उतना ही सुख होगा। वास्तव में कामना की पूर्ति से सुख नहीं होता। जब मनुष्य किसी पदार्थ के अभाव का दुःख मानकर कामना करके उस पदार्थ का मन से सम्बन्ध जोड़ लेता है, तब उस पदार्थ के मिलने पर अर्थात् उस पदार्थ का मन से सम्बन्ध ा-विच्छेद होने पर (अभाव की मान्यता का दुःख मिट जाने पर) सुख प्रतीत होता है। यदि वह पहले से ही कामना न करे तो पदार्थ के मिलने पर सुख और न मिलने पर दुःख होगा ही नहीं।

मूल में कामना की सत्ता है ही नहीं क्योंकि जब काम्य पदार्थ की ही स्वतन्त्र सत्ता नहीं है, तब उसकी कामना कैसे रह सकती है? इसलिये सभी साध ाक निष्काम होने में समर्थ हैं।

'द्वन्द्वैर्विमुक्ताः सुखदुःखसंज्ञैः वे भक्त सुख-दुःख, हर्ष-शोक, राग-द्वेष आदि द्वन्द्वों से रहित हो जाते हैं। कारण कि उनके सामने अनुकूल-प्रतिकूल जो भी परिस्थिति आती है, उसको वे भगवान्का ही दिया हुआ प्रसाद मानते हैं। उनकी दृष्टि केवल भगवतकृपा पर ही रहती है, अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थिति पर नहीं। अतः 'जो कुछ होता है, वह हमारे प्यारे प्रभु का ही मंगलमय विधान है 'ऐसा भाव होने से उनके द्वन्द्व सुगमतापूर्वक मिट जाते हैं।

भगवान् सबके सुहृद् हैं सुहृदं सर्वभूतानाम्' (गीता 5/29)। उनके द्वारा अपने अंश-(जीवात्मा) का कभी अहित हो ही नहीं सकता। उनके मंगलमय

विधानसे जो भी परिस्थिति हमारे सामने आती है, वह हमारे परमहितके लिये ही होती है। इसलिये भक्त भगवान के विधानमें परम प्रसन्न रहते हैं। शरीर, इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि को अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थिति का ज्ञान होने पर भी 'ऐसी परिस्थिति क्यों आ गयी? ऐसी परिस्थिति आती रहें आदि विकार, द्वन्द्व उनमें नहीं होते।

विशेष बात

द्वन्द्व (राग-द्वेषादि) ही विषमता है, जिनसे सब प्रकार के पाप पैदा होते हैं। अत: विषमता का त्याग करने के लिये साधक को नाशवान् पदार्थों के माने हुए महत्त्व को अन्तरूकरण से निकाल देना चाहिये। द्वन्द्व के दो भेद हैं

स्थूल (व्यावहारिक) द्वन्द्व- सुख-दु:ख, अनुकूलता -प्रतिकूलता आदि स्थूल द्वन्द्व हैं। प्राणी सुख, अनुकूलता आदि की इच्छा तो करते हैं, पर दु:ख, प्रतिकूलता आदि की इच्छा नहीं करते। यह स्थूल द्वन्द्व मनुष्य, पशु, पक्षी, वृक्ष आदि सभी में देखने में आता है।

सूक्ष्म (आध्यात्मिक) द्वन्द्व- यद्यपि अपनी उपासना और उपास्य को सर्वश्रेष्ठ मानकर उसको आदर (महत्त्व) देना आवश्यक एवं लाभप्रद है, तथापि दूसरों की उपासना और उपास्य को नीचा बताकर उसका खण्डन, निन्दा आदि करना 'सूक्ष्म द्वन्द्व' है जो साधक के लिये हानिकारक है।

वास्तव में सभी उपासनाओं का एकमात्र उद्देश्य संसार- (जडता) से सर्वथा सम्बन्ध-विच्छेद करना है। साधकों की रुचि, श्रद्धा-विश्वास और योग्यता के अनुसार उपासनाओं में भिन्नता होती है, जिसका होना उचित भी है। अत: साधक को उपासनाओं की भिन्नता पर दृष्टि न रखकर 'उद्देश्य' की अभिन्नता पर ही दृष्टि रखनी चाहिये। दूसरे की उपासना को न देखकर अपनी उपासना में तत्परतापूर्वक लगे रहने से उपासना-सम्बन्धी 'सूक्ष्म द्वन्द्व' स्वत: मिट जाता है।

गीता में 'स्थूल द्वन्द्व' को मोहकलिलम्' (2/52) और 'सूक्ष्म द्वन्द्व' को 'श्रुतिविप्रतिपन्ना' (2/53) पदों से कहा गया है। साधक के अन्त:करण में जब तक संसार (जड़ता) का सम्बन्ध या महत्त्व रहता है, तभी तक ये द्वन्द्व रहते हैं। 'स्थूल द्वन्द्व' संसार को विशेषरूप से सत्ता और महत्ता देता है। अत: 'स्थूल द्वन्द्व' को मिटाना बहुत जरूरी है।

जबतक मूढ़ता रहती है, तभी तक द्वन्द्व रहते हैं। वास्तव में देखा जाय तो अपने में द्वन्द्व मानना ही मूढ़ता है। राग-द्वेष, सुख-दु:ख, हर्ष-शोक आदि द्वन्द्व अन्तरूकरण में होते हैं, स्वयं (अपने स्वरूप) में नहीं। अन्तरूकरण जड़ है और 'स्वयं' चेतन एवं जड़ का प्रकाशक है। अत: अन्तरूकरण से 'स्वयं' का सम्बन्ध है ही नहीं। केवल मान्यता से ही यह सम्बन्ध प्रतीत होता है।

यह सभी का अनुभव है कि सुख-दु:खादि द्वन्द्वों के आने पर हम तो वही रहते हैं। ऐसा नहीं होता कि सुख आने पर हम और होते हैं तथा दु:ख आने पर और। परन्तु मूढ़तावश इन सुख-दु:खादि से मिलकर सुखी और दु:खी होने लगते हैं। यदि हम इन आने-जानेवालों से न मिलकर अपने स्वरूप में स्थित (स्वस्थ) रहें, तो सुख-दु:खादि द्वन्द्वों से स्वत: रहित हो जायँगे। इसलिये साधक को बदलने वाली अर्थात् आने-जाने वाली अवस्थाओं(सुख-दु:ख, हर्ष-शोकादि) पर दृष्टि न रखकर कभी न बदलने वाले अपने स्वरूप पर ही दृष्टि रखनी चाहिये, जो सब अवस्थाओं से अतीत है।

गीता में भगवान् ने राग-द्वेष आदि द्वन्द्वों से मुक्त होने का बड़ा सुगम उपाय बताया है कि अनुकूलता -प्रतिकूलता में राग-द्वेष छिपे हुए हैं। उनसे बचने के लिये साधक को केवल इतनी सावधानी रखनी है कि वह इनके वश में न हो (गीता 3/34)। तात्पर्य यह है कि राग-द्वेष दीखने ....शेष अगले अंक में

जाऊँ तो जाऊँ कहाँ?

(अम्बा लाल सुथार, सम्पादक)

(एक गोमाता और बछड़े की दर्द भरी कहानी)

पिछले अंक से आगे.......

शिवा वहाँ रो-रो कर अपनी माँ को पुकारता और इधर-उधर कातर नजरों से अपनी माँ के आने की राह देखता:-

तू इतनी दूर क्यों है माँ, बता नाराज क्यों है माँ,
मैं तेरा हूँ बुला ले माँ, गले फिर से लगा ले माँ।
ओ माँ, प्यारी माँ-ओ माँ, प्यारी माँ,
तेरे आंचल की छाया को मेरी नींदें तरसती है,
तेरी यादों के आंगन में मेरी आंखें तरसती है,
परेशान हो रहा हूँ मैं, अकेला रो रहा हूँ मैं,
मैं तेरा हूँ बुला ले तू, गले फिर से लगा ले तू
इतनी दूर क्यों है माँ, बता नाराज क्यों है माँ....
ये जो दुनिया है, वन है कांटों का,
तू फुलवारी है,
ओ माँ ओ माँ-ओ माँ ओ माँ.......
तू कितनी अच्छी है, तू कितनी भोली है,
प्यारी-प्यारी है,
ओ माँ ओ माँ-ओ माँ ओ माँ........

जब किसी छोटे बछड़े की माँ उससे अलग हो जाय तो माँ-बेटे के दुःख की कल्पना नहीं कर सकते। क्योंकि समस्त प्राणियों में सबसे अधिक वात्सल्य गोमाता में होता है।

दूसरी तरफ गोमाता ने भी अपने पुत्र के वियोग में अपना बुरा हाल कर दिया। वो भी रम्भा रम्भा कर अपने शिवा को पुकारती :-

मेरे राजा, मेरे लाल, तुझको ढूंढू मैं कहाँ?
मेरे राजा, मेरे लाल, तुझको ढूंढू मैं कहाँ?
रोए ममता, तड़पे माँ, तुझको ढूंढू मैं कहाँ?
तू क्या जाने तेरे जाने से, क्या बीती मेरे प्यारे
तेरे जाने के दुःख में तेरी माँ, गिनती है रातों को तारे
आजा वापिस आजा, मेरे राजा मेरे लाल,
तुझको ढूंढू मैं कहाँ? तुझको ढूंढू मैं कहाँ?
इस जग में क्या है मेरा, एक सपना था तू वो भी टूटा।
रूठी किस्मत, रूठी दुनिया, अखियाँ के तारे तू क्यों रूठा?
आजा वापिस आजा, मेरे राजा मेरे लाल,
तुझको ढूंढू मैं कहाँ? तुझको ढूंढू मैं कहाँ?
रोए ममता, तड़पे माँ, तुझको ढूंढू मैं कहाँ?
मेरे राजा, मेरे लाल, तुझको ढूंढू मैं कहाँ?

शिवा शहर की गलियों में माँ को ढूंढ़ते-ढूंढ़ते एक रात को एक गलत रास्ते पर निकल गया। शहर से बाहर चला गया। सर्दी का मौसम था। उस रात में भयंकर तूफान आया। तूफान में तेज हवाओं के साथ बहुत बरसात हुई। भयंकर सर्दी से शिवा ठिठुर गया और उसके प्राणों पर बन आई। शिवा थरथर कांपने लगा और बिजली की भयंकर आवाजों से घबरा गया। खेतों में कहीं सिर छुपाने के लिये इधर-उधर भागने लगा। आगे उसे एक बड़ा वटवृक्ष दिखा। भागकर उसके नीचे चला गया। वहाँ उसे राहत मिली।

कई घण्टों के बाद तूफान थमा, चारों और जल-ही-जल भर गया। बरगद के पेड़ के नीचे जंगल में शिवा अकेला बैठा, पेड़ पर उल्टे लटके चमगादड़ और पक्षियों की चहचहाहट के अलावा कोई हलचल नहीं। रातभर वहाँ बरगद की जड़ों में घुसकर बैठा रहा। सुबह सूरज की लालीमा हुई और बरगद पर पक्षी चचहाहट करने लगे। बरगद पर बंदर उछलकूद करने लगे। दिन उग आया। चारों तरफ सुनसान, सपाट खेत पड़े हैं। दूर-दूर तक कोई गोवंश या मनुष्य के दर्शन नहीं। ठण्ड से थर-थर कांप रहा है और माँ से बिछुड़ने का दुःख अलग। मन ही मन माँ को बहुत याद करता है, लेकिन माँ को ढूंढ़ना उसके वश में नहीं।

कोई नहीं परदेश में मेरा, किसको हाल सुनाऊं माँ।
दूर हूँ मैं मजबूर हूँ मैं, तेरे पास मैं कैसे आऊ माँ।।

थोड़ी धूप निकली, अब धूप में जाकर खड़ा हो गया। बंदर के बच्चे आते हैं, शिवा से मस्ती करते हैं। कभी कोई बच्चा शिवा के ऊपर बैठ जाता है, कोई शिवा का पूंछ पकड़ता है। थोड़ी देर में शिवा बन्दर के बच्चों से घुलमिल गया, आखिर करता भी क्या, क्योंकि वहाँ और कोई उसे मिला नहीं। शिवा को भूख लगी, खाने को कुछ ढूंढ़ रहा था तो बरगद की पत्तियों गिरी हुई मिली उसे खाने लगा। भूख होती है तो सूखे टुकड़े भी पाँच पकवान लगते हैं। शिवा ने बरगद की पत्तियें और बरगद के गिरे हुए फल खाकर पेट भर लिया। पास में एक गड्ढ़े में बरसात से पानी भरा था जो पीकर प्यास बुझा दी। फिर जाकर बरगद के नीचे बैठ गया और फिर माँ के बारे में सोचने लगा।

बैठा-बैठा चारों ओर देख रहा था तो कुछ दूरी पर लोग आते-जाते दिखाई दिये। उसको लगा कि उधर कोई बस्ती होगी। वह खड़ा हुआ और उस तरफ चलने लगा। कुछ ही दूरी पर एक रास्ता मिल गया। उस रास्ते पर वह चलने लगा। धीरे-धीरे घर आने लगे और आगे चलता रहा तो वही गाँव आ गया जहाँ उसकी माँ से वह बिछुड़ा था। अब उसने राहत की सांस ली कि सही जगह आ गया हूँ।

दूसरी तरफ गोमाता भी बहुत दुःखी और चिन्तित थी। अपना लाडला शिवा उससे बिछुड़ जो गया था, जिसका अभी तक कोई समाचार तक नहीं मिल रहा था। वह एक पानी के होज के पास चिन्ता में डूबी हुई बैठी थी। उसे अब शिवा से मिलने की कोई आशा नहीं रही, इसलिये शिवा जहाँ भी है उसको जीवन में आगे बढ़ने का आशीर्वाद दे रही है-

जितनी कलियाँ है जीवन में खिलती,
उतने कांटे भी होंगे यह सुन ले।
नाव चलती है तूफां में लेकिन,
तू सफर में कभी भी न रुकना।
गर दिखाये जो हिम्मत जरा सी,
होगा पूरा हर एक तेरा सपना।
जिसने जीवन दिया है तूझे वो
तेरा जिम्मा उठायेगा सुन ले।।
माँ की ममता कहे आज तुझसे,
है अकेले लड़ना यह सुन ले।
जितनी कलियाँ है जीवन में खिलती,
उतने कांटे भी होंगे यह सुन ले।

शिवा दिनभर माँ की खोज में और पेट भरने के लिये गाँव की गलियों में भटकता रहा। किसी ने रोटी दी, किसी ने डण्डा। कागज-कचरा खाकर पेट भरा। कहीं पर भी झुण्ड में बैठा गोवंश दिखता तो भागकर जाता कि इनमें माँ होगी, लेकिन हर बार निराशा हाथ लगती। पानी की तलाश में था। दूर से एक होज दिखाई दिया। पानी पीने के लिये गया। पानी पिया और पास में देखा तो एक पेड़ के नीचे कुछ गोवंश भी बैठा दिखाई दिया। भागकर गया कि माँ होगी। उधर माँ की नजर शिवा पर पड़ गई। उठ खड़ी हुई और भागकर सामने आई। उधर से शिवा भागा। रम्भाने की आवाज देकर माँ-बेटे का मिलन हुआ। शिवा भागकर गोमाता का दूध पीने लगा। गोमाता उसको प्रेम से चाट रही है। शिवा पूंछ हिला रहा है और दूध पी रहा है। वैसे तो गोमाता के दूध सूख सा गया था मगर आज शिवा को देखकर वात्सल्य के कारण थनों में से दूध टपकने लगा था। दोनों की आत्मा प्रसन्न हो गई।

अब माँ-बेटा दोनों साथ-साथ गाँव में फेरी लगाते हैं। जो भी रूखा-सूखा मिलता है उसी से मन को समझा देते हैं। कभी-कभी दोनों गाँव से दूर खेतों की ओर भी घूम आते हैं। तूफान की बरसात से छोटा-मोटा घास उग आया है, उसी के लिये खेतों में जाते हैं। दोनों का जीवन फिर से थोड़ा व्यवस्थित हुआ ही था कि एक और मुसीबत टूट पड़ी। गोमाता गाड़ियों के सर्विस स्टेशन की पक्की नाली में गिर गई। प्रयास किया मगर ....शेष अगले अंग में

भगवान के रहने के स्थान

(श्री रामचरितमानस)

श्रीरामजी को 14 वर्ष का वनवास हुआ। सीताजी और भाई लक्ष्मणजी सहित आप चित्रकूट पहुँचे। वहाँ का प्राकृतिक सुन्दर वातावरण देखकर आपने यहाँ निवास करने का विचार किया। आप महर्षि वाल्मीकि के आश्रम गये और मुनि से इसकी सहमति चाहते थे कि हमारे रहने से किसी को कष्ट न हो, ऐसा यहाँ कोई स्थान बतायें तो हम पर्ण कुटी बनाकर वास करें। जवाब में वाल्मीकि जी श्रीराम से कहते हैं कि पहले आप यह बतायें कि आप कहाँ नहीं हो वो जगह बतायें तो मैं आपके रहने के लिये स्थान बताऊँ? मुनि के रहस्य भरे वचन सुनकर श्रीरामचंद्रजी मन ही मन मुस्कराते हैं, तब मुनि श्रीरामजी को प्रेमरस से भीगी मीठी वाणी में उनके रहने के स्थान बताते हैं-

सुनहु राम अब कहउँ निकेता।
जहाँ बसहु सिय लखन समेता।
जिन्ह के श्रवन समुद्र समाना।
कथा तुम्हारि सुभग सरि नाना।
भरहिं निरंतर होहिं न पूरे।
तिन्ह के हिय तुम्ह कहुँ गुह रूरे।
लोचन चातक जिन्ह करि राखे।
रहहिं दरस जलधर अभिलाषे।।
नदरहिं सरित सिंधु सर भारी।
रूप बिंदु जल होहिं सुखारी।
तिन्ह कें हृदय सदन सुखदायक।
बसहु बंधु सिय सह रघुनायक।।

हे रामजी! सुनिए, अब मैं वे स्थान बताता हूँ, जहाँ आप, सीताजी और लक्ष्मणजी समेत निवास कीजिए। जिनके कान समुद्र की भाँति आपकी सुंदर कथा रूपी अनेक सुंदर नदियों से- निरंतर भरते रहते हैं, परन्तु कभी पूरे (तृप्त) नहीं होते, उनके हृदय आपके लिए सुंदर घर हैं और जिन्होंने अपने नेत्रों को चातक बना रखा है, जो आपके दर्शन रूपी मेघ के लिए सदा लालायित रहते हैं, तथा जो भारी-भारी नदियों, समुद्रों और झीलों का निरादर करते हैं और आपके सौंदर्य (रूपी मेघ) की एक बूँद जल से सुखी हो जाते हैं (अर्थात आपके दिव्य सच्चिदानन्दमय स्वरूप के किसी एक अंग की जरा सी भी झाँकी के सामने स्थूल, सूक्ष्म और कारण तीनों जगत के अर्थात पृथ्वी, स्वर्ग और ब्रह्मलोक तक के सौंदर्य का तिरस्कार करते हैं), हे रघुनाथजी! उन लोगों के हृदय रूपी सुखदायी भवनों में आप भाई लक्ष्मणजी और सीताजी सहित निवास कीजिए।

जसु तुम्हार मानस बिमल हंसिनि जीहा जासु।
मुकताहल गुन गन चुनइ राम बसहु हियँ तासु।।

आपके यश रूपी निर्मल मानसरोवर में जिसकी जीभ हंसिनी बनी हुई आपके गुण समूह रूपी मोतियों को चुगती रहती है, हे रामजी! आप उसके हृदय में बसिए।

प्रभु प्रसाद सुचि सुभग सुबासा।
सादर जासु लहइ नित नासा।।
तुम्हहि निबेदित भोजन करहीं।
प्रभु प्रसाद पट भूषन धरहीं।।
सीस नवहिं सुर गुरु द्विज देखी।
प्रीति सहित करि बिनय बिसेषी।।
कर नित करहिं राम पद पूजा।
राम भरोस हृदयँ नहिं दूजा।।
चरन राम तीरथ चलि जाहीं।
राम बसहु तिन्ह के मन माहीं।।

जिसकी नासिका प्रभु (आप) के पवित्र और सुगंधित (पुष्पादि) सुंदर प्रसाद को नित्य आदर के साथ ग्रहण करती (सूँघती) है और जो आपको अर्पण करके भोजन करते हैं और आपके प्रसाद रूप ही वस्त्राभूषण धारण करते हैं, जिनके मस्तक देवता,

गुरु और ब्राह्मणों को देखकर बड़ी नम्रता के साथ प्रेम सहित झुक जाते हैं, जिनके हाथ नित्य श्री रामचन्द्रजी (आप) के चरणों की पूजा करते हैं और जिनके हृदय में श्री रामचन्द्रजी (आप) का ही भरोसा है, दूसरा नहीं तथा जिनके चरण श्री रामचन्द्रजी (आप) के तीर्थों में चलकर जाते हैं, हे रामजी! आप उनके मन में निवास कीजिए।

मंत्रराजु नित जपहिं तुम्हारा।
पूजहिं तुम्हहि सहित परिवारा।।
तरपन होम करहिं बिधि नाना।
बिप्र जेवाँइ देहिं बहु दाना।।
तुम्ह तें अधिक गुरहि जियँ जानी।
सकल भायँ सेवहिं सनमानी।।
सबु करि मागहिं एक फलु राम चरन रति होउ।
तिन्ह कें मन मंदिर बसहु सिय रघुनंदन दोउ।।

जो नित्य आपके (राम नाम रूप) मंत्रराज को जपते हैं और परिवार (परिकर) सहित आपकी पूजा करते हैं। जो अनेक प्रकार से तर्पण और हवन करते हैं तथा ब्राह्मणों को भोजन कराकर बहुत दान देते हैं तथा जो गुरु को हृदय में आपसे भी अधिक (बड़ा) जानकर सर्वभाव से सम्मान करके उनकी सेवा करते हैं और ये सब कर्म करके सबका एक मात्र यही फल माँगते हैं कि श्री रामचन्द्रजी के चरणों में हमारी प्रीति हो, उन लोगों के मन रूपी मंदिरों में सीताजी और रघुकुल को आनंदित करने वाले आप दोनों बसिए।

काम कोह मद मान न मोहा।
लोभ न छोभ न राग न द्रोहा।।
जिन्ह कें कपट दंभ नहिं माया।
तिन्ह कें हृदय बसहु रघुराया।।

जिनके न तो काम, क्रोध, मद, अभिमान और मोह हैं, न लोभ है, न क्षोभ है, न राग है, न द्वेष है और न है और न कपट, दम्भ और माया ही है- हे रघुराज! आप उनके हृदय में निवास कीजिए।

सब के प्रिय सब के हितकारी।
दुख सुख सरिस प्रसंसा गारी।।
कहहिं सत्य प्रिय बचन बिचारी।
जागत सोवत सरन तुम्हारी।।

जो सबके प्रिय और सबका हित करने वाले हैं, जिन्हें दुःख और सुख तथा प्रशंसा (बड़ाई) और गाली (निंदा) समान है, जो विचारकर सत्य और प्रिय वचन बोलते हैं तथा जो जागते-सोते आपकी ही शरण हैं। जो दूसरे की सम्पत्ति देखकर हर्षित होते हैं और दूसरे की विपत्ति देखकर विशेष रूप से दुःखी होते हैं और हे रामजी! जिन्हें आप प्राणों के समान प्यारे हैं, उनके मन आपके रहने योग्य शुभ भवन हैं।

तुम्हहि छाड़ि गति दूसरि नाहीं।
राम बसहु तिन्ह के मन माहीं।।

और आपको छोड़कर जिनके दूसरे कोई गति (आश्रय) नहीं है, हे रामजी! आप उनके मन में बसिए।

जननी सम जानहिं परनारी।
धनु पराव बिष तें बिष भारी।।
जे हरषहिं पर संपति देखी।
दुखित होहिं पर बिपति बिसेषी।
जिन्हहि राम तुम्ह प्रान पिआरे।
तिन्ह के मन सुभ सदन तुम्हारे।

जो पराई स्त्री को जन्म देने वाली माता के समान जानते हैं और पराया धन जिन्हें विष से भी भारी विष है। जो दूसरे की सम्पत्ति देखकर हर्षित होते हैं और दूसरे की विपत्ति देखकर विशेष रूप से दुःखी होते हैं और हे रामजी! जिन्हें आप प्राणों के समान प्यारे हैं, उनके मन आपके रहने योग्य शुभ भवन हैं।

स्वामि सखा पितु मातु गुर जिन्ह के सब तुम्ह तात।
मन मंदिर तिन्ह कें बसहु सीय सहित दोउ भ्रात।।

हे तात! जिनके स्वामी, सखा, पिता, माता और गुरु सब कुछ आप ही हैं, उनके मन रूपी मंदिर में सीता

सहित आप दोनों भाई निवास कीजिए।

अवगुन तजि सब के गुन गहहीं। बिप्र धेनु हित संकट सहहीं।
नीति निपुन जिन्ह कइ जग लीका। घर तुम्हार तिन्ह कर मनु नीका।

जो अवगुणों को छोड़कर सबके गुणों को ग्रहण करते हैं, ब्राह्मण और गो के लिए संकट सहते हैं, नीति-निपुणता में जिनकी जगत में मर्यादा है, उनका सुंदर मन आपका घर है।

गुन तुम्हार समुझइ निज दोसा। जेहि सब भाँति तुम्हार भरोसा।।
राम भगत प्रिय लागहिं जेही। तेहि उर बसहु सहित बैदेही।।

जो गुणों को आपका और दोषों को अपना समझता है, जिसे सब प्रकार से आपका ही भरोसा है और राम भक्त जिसे प्यारे लगते हैं, उसके हृदय में आप सीता सहित निवास कीजिए।

जाति पाँति धनु धरमु बड़ाई। प्रिय परिवार सदन सुखदाई।
सब तजि तुम्हहि रहइ उर लाई। तेहि के हृदयँ रहहु रघुराई।

जाति, पाँति, धन, धर्म, बड़ाई, प्यारा परिवार और सुख देने वाला घर, सबको छोड़कर जो केवल आपको ही हृदय में धारण किए रहता है, हे रघुनाथजी! आप उसके हृदय में रहिए।

सरगु नरकु अपबरगु समाना। जहँ तहँ देख धरें धनु बाना।।
करम बचन मन राउर चेरा। राम करहु तेहि कें उर डेरा।।

स्वर्ग, नरक और मोक्ष जिसकी दृष्टि में समान हैं, क्योंकि वह जहाँ-तहाँ (सब जगह) केवल धनुष-बाण धारण किए आपको ही देखता है और जो कर्म से, वचन से और मन से आपका दास है, हे रामजी! आप उसके हृदय में डेरा कीजिए।

जाहि न चाहिअ कबहुँ कछु तुम्ह सन सहज सनेहु।
बसहु निरंतर तासु मन सो राउर निज गेहु।

जिसको कभी कुछ भी नहीं चाहिए और जिसका आपसे स्वाभाविक प्रेम है, आप उसके मन में निरंतर निवास कीजिए, वह आपका अपना घर है।

एहि बिधि मुनिबर भवन देखाए। बचन सप्रेम राम मन भाए।
कह मुनि सुनहु भानुकुलनायक। आश्रम कहउँ समय सुखदायक।

इस प्रकार मुनि श्रेष्ठ वाल्मीकिजी ने श्री रामचन्द्रजी को घर दिखाए। उनके प्रेमपूर्ण वचन श्री रामजी के मन को अच्छे लगे। फिर मुनि ने कहा- हे सूर्यकुल के स्वामी! सुनिए, अब मैं इस समय के लिए सुखदायक आश्रम (निवास स्थान) बतलाता हूँ

चित्रकूट गिरि करहु निवासू। तहँ तुम्हार सब भाँति सुपासू।।
सैलु सुहावन कानन चारू। करि केहरि मृग बिहग बिहारू।।

आप चित्रकूट पर्वत पर निवास कीजिए, वहाँ आपके लिए सब प्रकार की सुविधा है। सुहावना पर्वत है और सुंदर वन है। वह हाथी, सिंह, हिरन और पक्षियों का विहार स्थल है।

नदी पुनीत पुरान बखानी। अत्रिप्रिया निज तप बल आनी।।
सुरसरि धार नाउँ मंदाकिनि। जो सब पातक पोतक डाकिनि।।

वहाँ पवित्र नदी है, जिसकी पुराणों ने प्रशंसा की है और जिसको अत्रि ऋषि की पत्नी अनसुयाजी अपने तपोबल से लाई थीं। वह गंगाजी की धारा है, उसका मंदाकिनी नाम है। वह सब पाप रूपी बालकों को खा डालने के लिए डाकिनी (डायन) रूप है।

अत्रि आदि मुनिबर बहु बसहीं। करहिं जोग जप तप तन कसहीं।।
चलहु सफल श्रम सब कर करहू। राम देहु गौरव गिरिबरहू।।

अत्रि आदि बहुत से श्रेष्ठ मुनि वहाँ निवास करते हैं, जो योग, जप और तप करते हुए शरीर को कसते हैं। हे रामजी! चलिए, सबके परिश्रम को सफल कीजिए और पर्वत श्रेष्ठ चित्रकूट को भी गौरव दीजिए।

महामुनि वाल्मीकिजी ने चित्रकूट की अपरिमित महिमा बखान कर कही। तब सीताजी सहित दोनों भाइयों ने आकर श्रेष्ठ नदी मंदाकिनी में स्नान किया। श्री रामचन्द्रजी ने कहा- लक्ष्मण! बड़ा अच्छा घाट है। अब यहीं कहीं ठहरने की व्यवस्था करो। तब लक्ष्मणजी ने पयस्विनी नदी के उत्तर के ऊँचे किनारे को देखा (और कहा कि-) इसके चारों ओर धनुष के जैसा एक नाला फिरा हुआ है। ऐसा कहकर लक्ष्मणजी ने स्थान दिखाया। स्थान श्री रामजी को पसंद आया। यहीं पर पर्ण कुटी बनाकर श्री राम, लक्ष्मण और सीता साढ़े बारह वर्ष रहे।

श्री मीरामाधव भगवान प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव का हुआ दिव्य आयोजन

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा के संस्थापक एवं प्रधान संरक्षक परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंदजी महाराजश्री के सानिध्य में नेतरा बना भक्ती केंद्र

सुमेरपुर। धर्मनगरी नेतरा में श्री मीरामाधव भगवान प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव का दिव्य एवं ऐतिहासिक आयोजन 21 नवम्बर से 26 नवम्बर तक श्री आशापुरा गोसंवर्धन गोशाला नेतरा में परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंदजी महाराजश्री की पावन प्रेरणा तथा संत-महात्माओं के सानिध्य में आयोजित हुआ। समारोह अवधि में 21 से 25 नवम्बर पर्यंत दोपहर 2 से 5 बजे तक पू. गोवत्स श्री राध ाकृष्णजी महाराज की अमृतमयी वाणी में श्री मीरा माधव भक्ति कथा का प्रवाह रहा।

मंदिर निर्माण एवं प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन मनोरथी श्रीमती कंकूदेवीजी धर्मपत्नी गोलोकवासी श्री हजारीसिंहजी राजपुरोहित, श्री शेषमलजी, श्री रमेशसिंहजी, श्री किशोरसिंहजी, श्री सुरेशसिंहजी, श्री अर्जुनसिंहजी परिवार द्वारा किया गया।

समारोह में अनंत श्री विभूषित ब्रह्मसावित्री पीठाधीश्वर ब्रह्मर्षि श्री तुलसारामजी महाराज आसोतरा, दंडी स्वामी श्री देवानन्दजी महाराज जालोर, तारातरा महंत श्री प्रतापपुरीजी महाराज विधायक पोकरण, महंत श्री घनश्यामदासजी महाराज आध्यवाराह पीठाधीश्वर श्रीमहंत श्री रामप्रवेशदासजी महाराज वाराहघाट श्रीधाम वृंदावन, पू.श्री दयानन्द शास्त्री जी महाराज संगरिया, पू. महंत श्री दिनेशगिरीजी महाराज बुद्धगिरीजी की मढी फतेहपुर, पू. श्री राममोहनदासजी महाराज श्रीधाम वृंदावन, पू.संत श्री रघुनाथभारतीजी महाराज सिणधरी, पू.सन्त श्री गोविन्दवल्लभदासजी महाराज श्रीपतिधाम, पू. गोशरण श्री नंदरामदासजी महाराज पथमेड़ा, पू.महंत श्री रविन्द्रानंद सरस्वतीजी महाराज गो अभयारण्य सालरिया, पू. संत श्री बलदेवदासजी महाराज पालडी, पूज्य श्री चेतननाथजी महाराज वनाइ धाम, पू.संत श्री मुकुंदप्रकाशजी महाराज, पू.सन्त श्री प्रकाशदासजी महाराज निवाई, पू.संत श्री लक्ष्मणदासजी महाराज सहित संतों का आशीर्वाद सभी को प्राप्त हुआ।

समारोह में सिक्किम के महामहिम राज्यपाल आदरणीय श्री ओमप्रकाशजी माथुर, राजस्थान के माननीय मुख्यमंत्री आदरणीय श्री भजनलालजी शर्मा, एकलिंग दीवान श्री श्रीजी हुजूर लक्ष्यराजसिंहजी मेवाड़, भाजपा प्रदेशाध्यक्ष एवं सांसद श्री मदनजी राठौड़, कैबिनेट मंत्री श्री जोरारामजी कुमावत, वित्त आयोग अध्यक्ष श्री अरुणजी चतुर्वेदी, राज्यमंत्री श्री ओटारामजी देवासी, पाली सांसद श्री पीपी चौधरीजी, जालोर सिरोही सांसद श्री लुम्बारामजी चौधरी, आहोर विधायक श्री छगनजी राजपुरोहित, पाली विधायक श्री भीमराजजी भाटी, पूर्व विधायक श्री शंकरसिंहजी राजपुरोहित, श्री गुलाबसिंहजी राजपुरोहित, श्री धर्मनारायण जोशी आदि पधारें।

भारतवर्ष में श्री मीरामाधव भगवान का यह प्रथम मंदिर है। वर्ष 2016 में अभिनव ब्रजमंडल श्री मनोरमा गोलोकतीर्थ नंदगांव में सम्पन्न श्री मीरामाधव पाणिग्रहण संस्कार के बाद पहली बार उनके दिव्य युगल स्वरुप की प्राण प्रतिष्ठा हुई। नेतरा गोशाला के संस्थापक गोलोकवासी श्री हजारीसिंहजी राजपुरोहित के सुपुत्र किशोरसिंहजी राजपुरोहित को भगवान के धर्मपिता बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव के आचार्य पंडित श्री ललितजी द्विवेदी एवं वेदाचार्य पंडित श्री गंगाधरजी पाठक रहे। देशभर से हजारों गोभक्त एवं न्यास के पदाधिकारी इस ऐतिहासिक अवसर के साक्षी बनें।

न्यास केन्द्रीय कार्यकारिणी की बैठक सम्पन्न

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा लोक पुण्यार्थ न्यास के संस्थापक एवं प्रधान संरक्षक परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंद जी महाराजश्री के सत्संकल्प एवं चिन्मय सानिध्य में पूज्या गोमाता के समक्ष एवं कार्यकारी प्रधान संरक्षक पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्णजी महाराज के सभापतित्व में दिनांक 25 नवम्बर 2025 को श्री आशापुरा गोशाला, नेतरा, जिला पाली, राजस्थान में न्यास की केन्द्रीय कार्यकारिणी की बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में निम्न एजेण्डा बिन्दुओं पर विचार-विमर्श कर सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित किये गये:-

1. गत बैठक की कार्यवाही का पठन मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (सीईओ) श्री आलोकजी सिंहल द्वारा किया गया। समस्त सदस्यों द्वारा सहमति व्यक्त करते हुए उक्त कार्यवाही को यथावत अनुमोदित किया गया।

2. न्यास द्वारा गत बैठक से अब तक किए गए विशिष्ट आयोजनों, गोमहिमा प्रचार-प्रसार, श्रेष्ठ गोसेवा गतिविधियों एवं विभिन्न सेवा प्रकल्पों की प्रगति का कार्यकारी अध्यक्ष श्री रघुनाथसिंहजी राजपुरोहित द्वारा अध्यक्षीय प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया, जिसे सदस्यों द्वारा संतोषपूर्वक संज्ञान में लिया गया।

3. केन्द्रीय महामंत्री श्री अर्जुनसिंहजी राजपुरोहित द्वारा संस्थागत गतिविधियों, प्रशासनिक कार्यो, प्रकल्प व्यवस्थापन तथा आगामी योजनाओं का विस्तृत प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया। प्रतिवेदन को सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया।

4. कोषाध्यक्ष श्री ओमप्रकशजी गर्ग द्वारा अप्रैल 2025 से अक्टूबर 2025 तक की आय-व्यय विवरणिका एवं वर्तमान आर्थिक स्थिति प्रस्तुत की गई। जिसका सभा द्वारा अनुमोदन किया गया।

5. मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (सीईओ) श्री आलोकजी सिंहल ने मार्च 2026 माह तक की आवश्यकता का प्रबंधकीय प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जिस पर श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा द्वारा संचालित समस्त गोशालाओं में विद्यमान गोवंश के लिए आवश्यक औषधि, घास-चारा, पौष्टिक आहार, एवं सेवारत गोसेवकों को मासिक मानदेय प्रदान करने हेतु आवश्यक प्रशासनिक एवं वित्तीय स्वीकृतियाँ सर्वसम्मति से पारित की गई।

6. न्यास के आजीवन सदस्य, दानदाता एवं नियमित गोग्रास प्रदाताओं को धन्यवाद एवं गोमाता आशीर्वाद-प्रसाद वितरण हेतु संत-सानिध्य में केन्द्रीय कार्यकारिणी सदस्यों के भारत प्रवास कार्यक्रम की रुपरेखा तैयार करने की चर्चा में प्रत्येक आजीवन सदस्य को व्यक्तिगत उनके घर-घर जाकर मिलना चाहिए, मंतव्य सभा में आया। प्रमुख समयदानी आजीवन सदस्यों को पूज्य महाराजजी का वॉइस् मेसेज बनाना एवं पूज्य परम गोवत्स श्री राधाकृष्णजी महाराज का विडिओ बनाकर प्रत्येक प्रान्त के लिए प्रसारित करना जिससे समयदानी गोभक्त कार्यकर्ता आजीवन सदस्यों से व्यक्तिगत उनके घर जाकर मिले और इस संस्था के आजीवन सदस्य होने की एवं गोसेवा गतिविधियों की जानकारी बताये। इस कार्य की जिम्मेदारी आलोकजी सिंहल एवं अखिलेशजी पटेल को दी गयी कि इस निर्णय की पूर्ण रुपरेखा तैयार करे। इसे अगली सभा में प्रस्तुत करने का प्रस्ताव लिया गया।

7. कार्यकारी प्रधान संरक्षक पू.गोवत्स श्री राधाकृष्णजी महाराज की सत्संग कथाओं में वैदिक गोउत्पाद फाउण्डेशन द्वारा निर्मित पंचगव्यार्वेद औषधियों एवं वेदलक्षणा गोसाहित्य के प्रचार-प्रसार हेतु समयदानी सक्रिय कार्यकर्ताओं की एक टोली गठित करने का निर्णय सर्वसम्मति से लिया गया।

8. श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा के अनुग्रह निग्रह में प्रत्यक्ष संचालित गोसेवा प्रकल्पों में घास चारे की नियमित आपूर्ति हेतु जारी की गई निविदा एवं उससे प्राप्त निविदादाताओं की निविदाओं की प्रक्रिया से सदन को अवगत कराया गया। सदन ने इस प्रयास को और अधिक दृढ़ता के साथ आगे बढ़ाने का

सर्वसम्मत निर्णय लिया।

9. श्री गोवर्धननाथ मन्दिर एवं गो गोपाल कॉरिडोर के प्रारम्भ हो चुके निर्माण, श्री सुरभि शक्तिपीठ एवं सुरभि विश्वविद्यालय परियोजना को साकार करने हेतु सतत् चिन्तन एवं प्रयास करने के लिए उच्च स्तरीय समितियाँ अगली बैठक से पूर्व गठित करने के प्रस्ताव को पूर्ण सहमति के साथ पारित किया गया। इन समितियों के गठन के लिए प्रधान संरक्षकजी एवं कार्यकारी प्रधान संरक्षकजी को निवेदन करने हेतु आम सहमति बनी।

10. श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा द्वारा संचालित गोशालाओं एवं अन्य सेवा प्रकल्पों में कार्यरत गोसेवक कर्मचारियों के वार्षिक मानदेय में वृद्धि हेतु वेतन वृद्धि समिति की सिफारिशों के आधार पर विभिन्न प्रकल्पों से भेजी गयी सूचियों को सर्वसम्मति से स्वीकृत किया गया। कार्यालयी व अन्य व्यवस्था संबंधित कर्मचारियों को माह में दो सवैतनिक अवकाश देने का निर्णय भी लिया गया।

11. न्यास की वर्तमान केन्द्रीय कार्यकारिणी के दो वर्षीय कार्यकाल की पूर्णता पर नई कार्यकारिणी गठन के संबंध में विस्तारपूर्वक विचार-विमर्श किया गया। सभा ने कार्यकारी प्रधान संरक्षक पू. गोवत्स श्री राधाकृष्णजी महाराज को नई कार्यकारिणी का गठन करने हेतु अधिकृत करने का निर्णय सर्वसम्मति से लिया गया।

12. श्री गोधाम महातीर्थ आनंदवन पथमेड़ा में गीता एकादशी, 1 दिसम्बर से दत्त पूर्णिमा 4 दिसंबर पर्यन्त आयोजित होने वाले वार्षिक पाटोत्सव एवं 4 एवं 5 दिसंबर को अभिनव ब्रजमंडल में आयोजित होने वाली राष्ट्रीय पंचगव्य आयुर्वेद सेमिनार के विषय में सदन में चर्चा उपरान्त सभी के भाग लेने का निर्णय लिया गया।

13. वेदलक्षणा गो समृद्धि एफपीओ के लिए एचडीएफसी बैंक से स्वीकृत हुए 4.70 करोड़ रुपए के ऋण की जानकारी सदन में प्रस्तुत की गयी एवं गोसंवर्धन एवं नेपियर उत्पादन हेतु एसबीआई बैंक में ऋण हेतु चल रही प्रगति से सदन को अवगत कराया गया। सदन ने इन कार्यो को और अधिक गति से करने की आवश्यकता पर बल दिया।

14. न्यास के व्यावसायिक प्रकल्प वैदिक गो उत्पाद उत्पाद फाउंडेशन के कार्य को और गति से आगे बढ़ाने पर विस्तारपूर्वक चर्चा हुई एवं इस कार्य में सभी पूर्ण सहयोग करें ऐसा निर्णय लिया गया।

कार्यकारी प्रधान संरक्षक पू. गोवत्स श्री राधाकृष्णजी महाराज, केन्द्रीय संरक्षक श्री बलदेवदासजी महाराज, कार्यकारी अध्यक्ष श्री रघुनाथसिंहजी राजपुरोहित, केन्द्रीय महामंत्री श्री अर्जुनसिंहजी अंकलेश्वर, कोषाध्यक्ष श्री ओमप्रकाशजी गर्ग, उपाध्यक्ष श्री केसारामजी सुथार, मैनेजिंग ट्रस्टी श्री अम्बा लाल जी सुथार, संयुक्त निदेशक श्री ब्रह्मदत्तजी पुरोहित, केन्द्रीय आयोजन मंत्री श्री नरेन्द्रजी पुरोहित, क्षेत्रीय निदेशक श्री मेघराजजी मोदी, सचिव श्री लालसिंहजी रणधीसर, श्री प्रकाशजी रायपुरिया, राष्ट्रीय प्रवक्ता डूंगरारामजी पुरोहित, श्री गोपालभाई शाह, श्री जोगराजजी राजपुरोहित, श्री घनश्यामजी मूंदड़ा, श्री घेवरजी पुरोहित सी ए, ठाकुर हरिसिंहजी देवड़ा, श्री संदीपजी पोद्दार, श्री कैलाशजी राजपुरोहित, साधक धर्मशरणजी एवं अन्य माननीय सदस्यों द्वारा मार्गदर्शनात्मक निर्देश प्रदान किए गए। उक्त के अतिरिक्त भी सभी आवश्यक सेवा प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किए गए।

सभापति महोदय द्वारा सभी सदस्योंका आभार व्यक्त किया। बैठकका समापन पूज्य रविन्द्रनंदजी सरस्वतीजी महाराज द्वारा सर्वहितकारी प्रार्थनासे हुआ।

हिन्दी मासिक पत्रिका ''कामधेनु कल्याण'' स्वामी ''श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला पथमेड़ा'' के लिए प्रकाशक एवं सम्पादक अम्बा लाल सुथार, मुद्रक पुरखाराम पुरोहित चारभुजा प्रिंटिंग प्रेस, गोमाता सर्किल, हाडेचा रोड़ साँचौर से मुद्रित करवाकर ''श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला'' पथमेड़ा, तहसील-सांचौर, जिला-जालोर (राजस्थान) 343041 से प्रकाशित।

मधुमेह (डायबिटीज) रोग और उपचार

(डॉ. श्याम सिंह राजपुरोहित वैद्य)

मधुमेह (डायबिटीज) एक ऐसी बीमारी बन गई है जिसको लोगों ने स्वीकार कर लिया है। यह रोग वास्तविकता में हमारी जीवनशैली के कारण होता है। हमारा खानपान और हमारी जीवनशैली के साथ–साथ तनाव में जीवन जीना इस रोग का मुख्य कारण समझ में आता है, हालाँकि आधुनिक विज्ञान इस रोग का संबंध अग्नाशय की **beta** सेल से जोड़ते हैं, जो इंसुलिन कम निकालने से मधुमेह को पैदा करता है। परंतु वास्तविकता यह है कि अग्नाशय की **beta** सेल इंसुलिन के सिक्रेशन के लिए पीयूष ग्रंथि के अधीन कार्य करती है और पीयूष ग्रंथि विचारों के अधीन होती है। इसलिए इस रोग में चिकित्सक द्वारा दी हुई औषधि का उपयोग समय पर करने के उपरांत भी रक्त शुगर कभी पर हो जाती है, कभी नीचे हो जाती है और कभी–कभी सामान्य स्थिति में भी आ जाती है, जबकि रोग की शैली ऐसी नहीं होती है। यह जीवनभर चलने वाली समस्या है। जीवनशैली में यथोचित बदलाव से इसे नियंत्रण में रखा जा सकता है।

जब हम लोग ऋतु के अनुसार अनाज का उपयोग करते थे और हमारी दिनचर्या प्रकृति के अनुकूल हुआ करती थी, व्यक्ति परिश्रम करता था तब इस रोग के रोगियों की संख्या उंगलियों पर गिनी जा सकती थी, परंतु जबसे हम गेहूं, चावल, आलू और बाजार की मिठाई ज्यादा उपयोग करने लग गए हैं, गोगव्यों से दूर हो गये हैं और प्रकृति के विपरीत दिनचर्या शुरू कर दी और परिश्रम की कमी हो गई है तब से हर तीसरे घर में शुगर के रोगी दिखाई देने लग गए हैं। मानसिक तनाव के अंदर जीवन जीना और शारीरिक परिश्रम नहीं करना हमारे भविष्य में रोगों के बढ़ने का कारण बनेगा। इसलिए समय रहते हमको सचेत हो जाना चाहिए इसी में ही समझदारी है। पंचगव्य से इसे काफी हद तक नियंत्रण में रखा जा सकता है। श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा द्वारा डायबिटीज के उपचार हेतु वैदिक मधुमेहान्तक घनवटी नाम से एक अद्वितीय औषधि तैयार की गई है। यह शरीर में बढ़ने वाले शुगर को नियंत्रित करती है। यह अग्नाशय के कार्य को बढ़ाकर इंसुलिन निर्माण की क्रिया को तेज करती है, जिससे शुगर का प्रभाव शरीर पर कम होने लगता है और धीरे–धीरे नियंत्रित हो जाता है। यह सुबह शाम एक–एक गोली गुनगुने गर्म पानी के साथ भोजन से पहले चबाकर लेनी चाहिए और प्रतिदिन शारीरिक परिश्रम अवश्य करें।

कुल पृष्ठ–36
दिसम्बर 2025

प्रकाशन तिथी : 01 दिसम्बर 2025
कामधेनु कल्याण 20 रुपए

RNI Reg- No - RAJHIN/2022/17167
Postal Reg No: RJ/SRO/9681/2025-2027

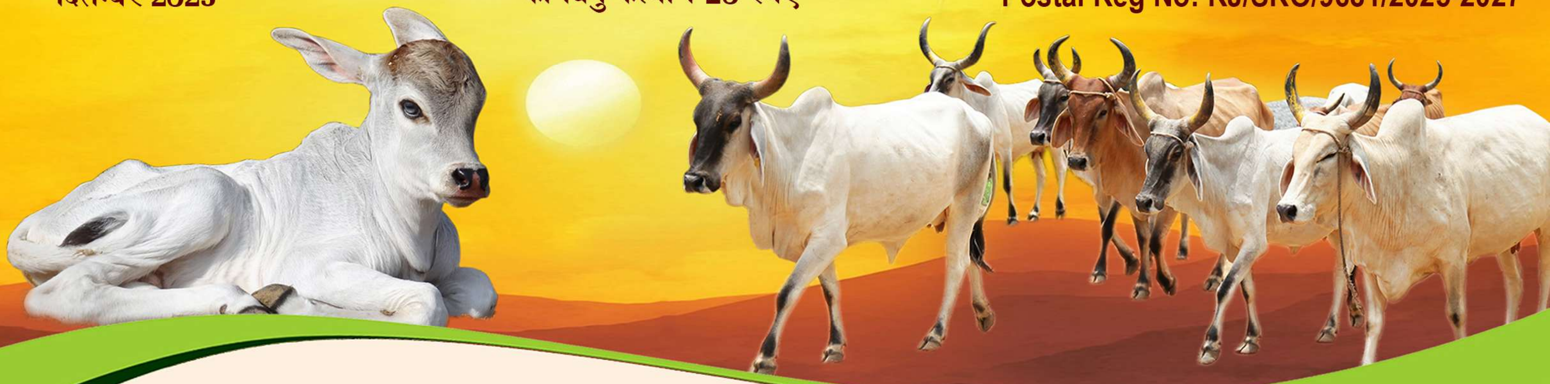

श्रद्धानुसार गोसेवार्थ सहयोग अवश्य करें।

1. एक गोमाता की सेवार्थ गोग्रास राशि प्रतिवर्ष – रु. 21,000/–
2. हरा घास – चारा की एक गाड़ी – रु. 31,000/–
3. सूखे घास की एक गाड़ी – रु. 101,000/–
4. अक्षय भू–दान प्रति एक बीघा की राशि – रु. 2,51,000/–
5. जीवन के साथ भी जीवन के बाद भी
   आजीवन गोपालक बनें प्रति गोवंश – रु. 2,51,000/–
6. पौष्टिक आहार की एक गाड़ी की राशि – रु. 5,00,000/–
7. गुड़ की एक गाड़ी की राशि – रु. 4,51,000/–
8. बीमार गोवंश की दवाईयां प्रतिमाह – रु.11,00,000/–
9. पथमेड़ा द्वारा सेवित गोवंश के एक दिन का
   पौष्टिक आहार, हरा एवं सूखा घास चारा – रु. 51,00,000/–
10. आप अपने निवास अथवा प्रतिठान पर नियमित गोग्रास राशि दानपात्र में अर्पित कर सकते हैं।
11. अपने परिवार में जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ, उत्सव, व्रत–उपवास, पुण्यतिथि के अवसर पर सामर्थ्यानुसार सहयोग करें एवं गोमाता को अपने व्यवसाय में भागीदार बनाकर औरों को भी गोसेवा हेतु प्रेरित करें।

SHRI GODHAM MAHATEERTH PATHMEDA LOK PUNYARTH NYAS
A/C: 08490100023827, BANK OF BARODA ASHRAM ROAD AHMEDABAD,
IFSC CODE: BARB0ASHRAM (Fifth character is zero)

7742093179, 7073000151, 9760635735

www.pathmedagodham.org Godham Mahatirth pathmeda Official